श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर गणधर जिनाय नमः

गणधर वलय विधान -I

श्री गणधर वलय पूजन
विधान मण्डल

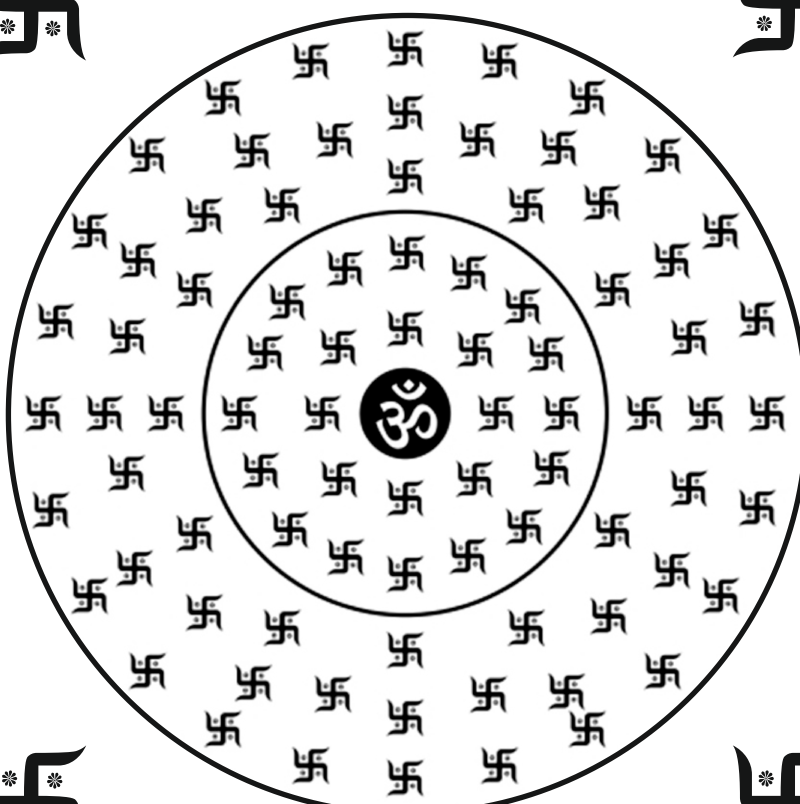

रचयिताः

परम पूज्य क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

कृति : **गणधर वलय विधान – I**

कृतिकार : प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण : द्वितीय, 2026

प्रतियाँ : 1000

संकलन : स्थविर मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज
मुनिश्री विभोरसागरजी, मुनिश्री विलक्ष्यसागरजी,
मुनिश्री विपिनसागरजी

सहयोगी : आर्यिका श्री 108 भक्तिभारती माताजी
क्षुल्लिका श्री 105 वात्सल्यभारती माताजी

संपादन : ब्र. आस्था दीदी - मो.: 9660996425
ब्र. प्रदीप भैया - मो.: 7568840873

प्राप्ति स्थल : 1. सुरेश जैन सेठी जयपुर, मो.: 9413336017
2. विशद साहित्य केन्द्र, रेवाड़ी, मो.: 9416888879
3. नीरज जैन, लखनऊ, मो.: 9451251308
4. जय अरिहंत टेडर्स, दिल्ली, मो.: 9818115971
5. राजेश जैन, खाकरोट वाले, इन्दौर, मो.: 9425316970

पुण्यार्जक :

विनय जी छाबड़ा, आशीष जी जैन
अजित जी छाबड़ा, दिलीप जी लुहाड़िया
छोटा, महावीरजी, कागदीपुरा (म.प्र.)
मो.: 7898130345

कृति : **गणधर वलय विधान – I**

कृतिकार : प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण : द्वितीय, 2026

प्रतियाँ : 1000

संकलन : स्थविर मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज
मुनिश्री विभोरसागरजी, मुनिश्री विलक्ष्यसागरजी,
मुनिश्री विपिनसागरजी

सहयोगी : आर्यिका श्री 108 भक्तिभारती माताजी
क्षुल्लिका श्री 105 वात्सल्यभारती माताजी

संपादन : ब्र. आस्था दीदी - मो.: 9660996425
ब्र. प्रदीप भैया - मो.: 7568840873

प्राप्ति स्थल : 1. सुरेश जैन सेठी जयपुर, मो.: 9413336017
2. विशद साहित्य केन्द्र, रेवाड़ी, मो.: 9416888879
3. नीरज जैन, लखनऊ, मो.: 9451251308
4. जय अरिहंत टेडर्स, दिल्ली, मो.: 9818115971
5. राजेश जैन, खाकरोट वाले, इन्दौर, मो.: 9425316970

पुण्यार्जक :

श्री वरुण बड़जात्या, विन्ध्याचल, इन्दौर, मो.: 9407147800
श्री दिलीप जैन, श्रीमती ऊषा जैन बड़जात्या, इन्दौर
श्री अजित जैन, निर्मल बड़जात्या, मो.: 8889882503
श्रीमती नीता जैन, प्रदीप गंगवाल, मो.: 9425958072
सुधीर जैन, मो.: 9827313650
शोभा जैन, मो.: 9425081762
सुशीलाजी, सुनीताजी पाण्ड्या, सियाराम पार्क, इन्दौर

02

श्री गणधर वलय व्रत-कथा

दोहा- राजपुत्र चन्द्राभ ने, गणधर वलय विधान।

करके पाया राजसुख, एवं पद निर्वाण ॥

जम्बूद्वीप में मंगलावती नाम का एक देश है। उस देश में 'रत्न संचय' नाम का सुंदर नगर था। उस नगर में पराक्रमी, गुणवान एवं न्याय-परायण **'सोमवाहन'** नामक राजा राज्य करता था। उसकी पटरानी का नाम विनयवती था, जो रूपवती एवं गुणवती थी। उस रानी के पुत्र का नाम **'चन्द्राभ'** था। उस राजपुत्र की पत्नी **'चन्द्रमुखी'** थी, जो यथानाम तथा गुण वाली थी। इस प्रकार राजा 'सोम-वाहन' बड़े न्यायपूर्वक प्रजा का पालन करता था।

एक दिन की बात है कि राजा सोम-वाहन राज्य सभा में बैठे थे उसी समय वनपाल ने आकर राजा को कमल का फूल भेंट किया। राजा ने उसे सप्रेम स्वीकार किया। राजा उस फूल को देखकर चकित रह गया कि उसके बीच में एक भौंरा मरा हुआ है। इस घटित घटना से राजा को संसार से वैराग्य हो गया। तत्काल वे जैनेश्वरी दीक्षा ग्रहण कर कठोर तपस्या द्वारा कर्मरूपी शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर मोक्षरूपी लक्ष्मी के कंत बन गये।

इधर राजपुत्र **'चन्द्राभ'** यौवन अवस्था के मद में मस्त हो अपने समवय वाले मित्रों के साथ सप्त व्यसनों का सेवन करने लगा। एक दिन की बात है कि वह जंगल में शिकार खेलने के लिये गया। यहाँ उसे शिकार नहीं मिला। उसी भीषण वन में परम तपस्वी दिगम्बर मुनि अभयघोष तपस्या में लीन थे। उस दुष्ट राजपुत्र की दृष्टि ध्यानस्थ मुनिराज पर पड़ी। उन्हें देखकर वह क्रोधित होकर बोल उठा 'यही मेरे शिकार में बाधा डालने वाला तपस्वी है, इसी से आज शिकार हाथ नहीं लग सका।' अतः उस मदोन्मत्त राजपुत्र ने उन मुनिराज का अपमान कर सिपाहियों द्वारा उन्हें वन से निकलवा दिया।

कुछ समय बीतने पर उस पाप के फल से 'कलिंग' देश के राजा कालयवन ने

अपनी सेना के साथ रत्न संचय नगर पर चढ़ाई कर दी। राजा चन्द्राभ को पराजित कर उसकी रानी चन्द्रमुखी सहित देश से निकाल दिया, स्वयं कालयवन राज्य करने लगा। देखिये, मुनिराज के तिरस्कार करने का फल उसको तुरन्त मिल गया। इसलिये इससे यह शिक्षा मिलती है, कि कभी भी मुनिराज का तिरस्कार– अपमान नहीं करना चाहिये, उनको नग्न देखकर घृणा तथा अपशब्द कहना उचित नहीं है। प्रत्युत उनकी विनय सहित पूजा भक्ति अर्चना आदि करना चाहिए।

इस कारण से राजा चन्द्राभ दुःखी होकर दिन व्यतीत करता हुआ मलयाचल पर्वत की गुफा में रहने लगा। दैवात् एक दिन पुण्योदय से उसकी दृष्टि एक मुनिराज युगंधर स्वामी पर पड़ी। मुनिराज के दर्शन करने में उसे अत्यन्त आनन्द आया। वह मुनिराज के चरणों में बड़ी विनय और भक्ति के साथ नमस्कार कर, पास में बैठ गया। मुनिराज को अपनी दुःख गाथा सुनाता हुआ बोला हे स्वामी मेरा राज्य किस कारण से छीना गया था? और मैं इतना दुःखी क्यों हुआ? यह सुन मुनिश्री ने अवधि ज्ञान द्वारा उसकी सारी घटित घटना जान ली, तब वे अपनी मृदुवाणी द्वारा बोले हे भव्य, हे पुरुषोत्तम राजन ! तुमने एक बार अपने यौवन के मद में उन्मत्त होकर '**अभय घोष**' नाम के मुनिराज का अपमान किया था और उनको वन से निकलवा दिया था। उस पाप के फल से तुम भी अपने राज्य से निकाले गये और इस दुःखी अवस्था को प्राप्त हुये हो। इस प्रकार वह उन अवधि ज्ञानी मुनिराज के वचनों को सुनकर बड़ा पश्चाताप करने लगा। साथ में अपनी निन्दा करता हुआ मुनिराज के सम्मुख दोनों हाथ जोड़कर विनती करने लगा कि हे जगद्गुरु इस पाप को दूर करने के लिये सुगम उपाय बतलाइये, जिससे मैं इस संसार सागर से पार हो सकूँ ? इस प्रकार उसने गदगद होकर उनके चरणों में मस्तक रख दिया। तब मुनिराज संबोधन करते हुये बोले 'हे राजन! इस पाप से मुक्त होने का एक ही सुगम उपाय है कि तुम गणधर वलय व्रत का भक्ति एवं विधिपूर्वक पालन करो और मंडल मांडकर पूजन करो।' इस व्रत का पालन करने से उस पाप की शांति होगी और पुण्य का संचय होगा। उस व्रत को करने की पूरी विधि भी बतला दी जो कि इस प्रकार की थी–

श्री गणधर वलय व्रत-कथा

इस व्रत को कार्तिक-फाल्गुन और आषाढ़ की अष्टाहिका के पर्व दिनों में गुरु साक्षी से लेना चाहिये। प्रत्येक पर्व की अष्टमी के दिन शुद्ध छने जल से स्नान कर धुले वस्त्र पहनकर एवं पूजन की सम्पूर्ण सामग्री लेकर जिन मंदिर में जाना चाहिये। मंदिरजी में प्रवेश कर विधि पूर्वक दर्शन कर मंदिर की वेदी की तीन प्रदक्षिणा देवें। ईर्यापथ शुद्धिपूर्वक जिनेन्द्र भगवान् को भक्ति से साष्टांग नमस्कार करें। शुद्ध भूमि या काष्ठ के पाटिए पर पंचवर्ण का गणधर वलय का मांडना बनाना चाहिए। घी का दीपक जलायें, जिन प्रतिमाजी का अभिषेक करें। अष्टाहिका पर्व में प्रत्येक अष्टमी से लेकर पूर्णमासी तक पूजन कर आरती करनी चाहिए और इस मंत्र का जाप जपना चाहिए।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः असि आ उसा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

अथवा

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ स झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

यथाशक्ति चार प्रकार का दान करें। इस व्रत को अपनी शक्ति प्रमाण 48, 36, 24, 12 या 6 वर्षों तक करना चाहिए। कम से कम 3 वर्ष या 3 अठाइयों में तो करना ही चाहिए। इस व्रत के करने से महापुण्य बंध होता है, अपार अचिंत्य मोक्ष रूपी सुख की प्राप्ति होती है। इस प्रकार मुनिराज ने इस व्रत की विधि बतलायी। साथ में अनिवार्य रूप से करने की प्रेरणा भी दी। राजा ने बड़ी भक्ति से उस गणधर वलय व्रत को रानी सहित स्वीकार किया। राजा चन्द्राभ और रानी चन्द्रमुखी ने मुनिराज को पंचांग नमस्कार कर अपने श्वसुर के घर को प्रस्थान किया। वहाँ पहुँचकर वे उस व्रत का पालन विधिपूर्वक करने लगे।

आयु पूर्ण होने पर मलयाचल देश के राजा का अकस्मात् स्वर्गवास हो गया, उनके कोई सन्तान नहीं थी। इस कारण राजा के आठों मंत्रियों ने एकत्र होकर विचार किया कि इस राज्य का राजा किसे बनाया जाय ? अन्यथा यह राज्य कैसे चलेगा ? इस समस्या का समाधान होना आवश्यक है। उन मंत्रियों ने मिलकर निर्णय किया कि राज्य वंश के एक सुन्दर हाथी को सजाया जाय और उसको एक स्वर्ण कलश तथा फूलमाला देकर छोड़ दिया जाय। वह हाथी जिस महापुरुष के

गले में माला डाल देवे, उसे ही इस राज्य का राजा बनाया जाय । इस निर्णय के अनुसार हाथी को सजाया गया, उसकी सूंड में स्वर्ण कलश एवं माला दे दी गयी। वह हाथी देश देशान्तर घूमता हुआ उस स्थान पर आया, जहाँ पर चन्द्राभउपस्थित था । हाथी ने वहाँ पहुँच कर उसके गले में माला डाल दी और स्वर्ण कलश से अभिषेक कर उसे अपने मस्तक पर बैठा कर राजमहल में ले आया । हाथी के आने पर प्रजा को बड़ा आनंद आया, चन्द्राभ का राज्याभिषेक कर उसे राज्य का अधिकारी घोषित किया, उसे राजा बनाया।

अब राजा चन्द्राभ उस देश का स्वामी हो गया और अपनी पत्नी सहित सुख से राज्य करने लगा। कुछ दिनों के बाद वह अपनी पुरानी राजधानी रत्न संचयपुर गया । अपनी सेना द्वारा कालयवन से जीते हुए अपने राज्य को पुनः प्राप्त कर लिया और वहाँ पर अपनी विजय पताका फहरा दी। इस प्रकार अपने विजित राज्य पर शासन करने लगा। वह सदा धर्म कर्म में रत रहता था। गणधर वलय व्रत का यथा विधि पालन कर आयु के अंत में मरकर लांतव नामक स्वर्ग में देव हुआ। वहाँ बहुत काल तक सुखपूर्वक भोग भोगता रहा। यह है उस महान व्रत को पालने का फल, जिसके प्रताप से एक रंक भी राजा बन गया और देवलोक को प्राप्त हुआ, धन्य है उसके माहात्म्य को ।

जम्बूद्वीप में अपर विदेह नाम का क्षेत्र है। वहाँ सीता नदी के दक्षिण तट पर पद्म नाम का देश है। उस देश में सिंहपुर नाम का नगर है। वहाँ का राजा पुरुषदत्त था । उसकी विमलमति रानी के गर्भ से चन्द्राभ का जीव लांतव स्वर्ग से च्युत होकर आया । नवमास पूर्ण होने पर शुभ मुहूर्त में पुत्र रूप में जन्म लिया। उसका नाम अपराजित रखा गया । क्रमशः बड़े होने पर पुत्र अपराजित को अपना राज्य सौंप, पुरुषदत्त राजा ने संसार को असार जान, भोगों को त्याग कर, जिनदीक्षा धारण की । अंत में वे मुनि घोर तपस्या कर सर्वघाति अघाति कर्मों को क्षय कर मोक्ष में गये। इधर राजा अपराजित महामण्डलेश्वर पदवी को धारण कर आनंद एवं न्याय पूर्वक प्रजा का पालन करने लगा।

एक दिन उद्यान में विमलवाहन नामक केवली भगवान् का पदार्पण हुआ । उनके आने का समाचार सुनकर अपराजित राजा उनके दर्शनार्थ उद्यान में गये । उनके चरणों में नमस्कार कर! तीन प्रदक्षिणा देकर सभा में बैठ गये। उनका

धर्मोपदेश सुन वैराग्य उपजा, अतः उसने उसी समय दीक्षा ग्रहण कर ली। तपस्या करने से पूर्व भव में जो गणधर वलय नामक व्रत का पालन किया था, उस व्रत के पुण्य के फलोदय से उस अपराजित राजा ने 'गणधर' पदवी धारण की, फिर कठोर तपस्या द्वारा कर्म क्षय कर सिद्ध पद प्राप्त किया।

यह प्रसिद्ध है कि इन व्रतों का श्रद्धापूर्वक पालन करके भव्यजीव उत्तम गति को प्राप्त करते हैं। यही कारण है कि मानव जीवन में इन व्रतों के प्रति श्रद्धा, विश्वास और पालन करने में तत्परता है। प्रत्येक भव्यजन इन व्रतों को दृढ़तापूर्वक पालते हैं। अतः प्रत्येक प्राणी मात्र को इस ओर पूरा ध्यान देना चाहिए, क्योंकि कहा है कि–

कीजे शक्ति प्रमाण, शक्ति बिना सरधा धरें।

द्यानत सरधावान, अजर अमर पद भोगवें ॥

"सर्व सुख समृद्धि प्रदाता गणधर वलय विधान का माहात्म्य"

भारतीय संस्कृति में प्रायः सभी लोग प्रत्येक कार्य के प्रारम्भ में विघ्नों के परिहार हेतु गणेश की स्थापना आराधना पूजा करते हैं।

श्रमण संस्कृति में भी नित्य पूजा पाठ के प्रारम्भ में स्वस्ति मंगल विधान के रूप में चौंसठ ऋद्धि के अधिपति गणधर गणेश का स्तवन किया जाता है।

वृहत प्रतिक्रमण में उसके कर्ता श्री गौतम गणधर भगवान ने गणधर वलय स्तोत्र के अंत में कहा है–

नित्यं यो गणभृन्मंत्र विशुद्धसन् जपत्यमुम् ।

तस्यास्रवस्य पुण्यानां निर्जरा पाप कर्मणाम् ॥

नश्यादुपद्रव कश्चिद व्याधि भूत विषादिभिः ।

सदसत् वीक्षणे स्वप्ने समाधिश्च भवेन्मृतो ॥

अर्थात् जो विशुद्ध होकर विधि अनुष्ठानपूर्वक इस गणधर वलय मंत्र का जाप करता है, उसके पुण्य का आश्रव तथा पाप कर्म की निर्जरा होती है। शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक सर्व व्याधियाँ, विषादि से उत्पन्न सर्वरोग तथा अन्य भी दैविक, आर्थिक, दारिद्रय आदि सब उपद्रव नष्ट हो जाते हैं। उस साधक को स्वप्न में भावि शुभाशुभ का ज्ञान हो जाता है तथा अंत में वह समाधिपूर्वक मरण करता है।

क्या आप जानते हैं ? श्रमण धर्म में प्रत्येक दीक्षा से पूर्व गणधर वलय मण्डल

विधान करना क्यों आवश्यक है? जैनाचार्यों के अनुसार श्रमण धर्म आत्म कल्याण के साथ जनकल्याण में, संस्कार निर्माण में बहुत ही महत्वपूर्ण, साधनापूर्ण धर्म है।

दीक्षार्थी के दीक्षा जीवन संबंधी विघ्नों के परिहार हेतु, ऋद्धि विद्या मंत्रों की सिद्धि की सामर्थ्य प्राप्ति हेतु, आध्यात्मिक जीवन के उज्ज्वल भविष्य हेतु, दीक्षा से पूर्व `गणधर वलय मण्डल विधान` आवश्यक है तथा गणेश स्तवन अनिवार्य है।

दीक्षार्थी के समान यदि आप भी अपने विघ्नों को समाप्त करना चाहते हैं, जीवन का सर्वांगीण सार्वभौमिक विकास चाहते हैं तो आप भी गणधर वलय विधान रचाइये और अपना सोया हुआ भाग्य जगाये।

किसे क्या लाभ होगा ?

विद्यार्थी, शोधार्थी, अध्यापक, वैज्ञानिक, कवि, साहित्यकार विद्वत् वर्ग- यदि आप इस वर्ग में हैं तो ध्यान देवें। गणधर प्रभो 64 ऋद्धियों के अधिष्ठाता है। वे स्वयंबुद्ध है अर्थात् उनके स्वयमेव नवीन से नवीन प्रज्ञा, धारणा, जागृत होती हैं तथा उसकी स्मृति चिरस्थायी हो जाती हैं। उनकी आराधना से आपको भी यह लाभ होगा।

गणधर वलय यंत्र व मंत्र का "झ्रौं" बीजाक्षर चौसठ ऋद्धियों का वाचक बीजाक्षर है। जिसमें प्रज्ञा सम्बन्धी आठ ऋद्धियाँ समाहित हैं। उनकी आराधना से आप व आपका बेटा प्रज्ञावंत, मेधावी, गंभीर बन जायेगा, क्योंकि श्रीमद् पूज्यपादाचार्य ने कहा है-

अज्ञानोपास्ति- रज्ञानं, ज्ञानं ज्ञानि समाश्रयः ।

ददाति यत्तु यस्यास्ति, सुप्रसिद्धं - मिदं वचः ॥

अर्थात अज्ञानी की संगति, उपासना करने से अज्ञान बढ़ता है और ज्ञानी आश्रय सेवा, संगति, उपासना, आराधना करने से ज्ञान की प्राप्ति व प्रगति होती है, क्योंकि जिसके पास जो गुण होता है, वह वही देता है! यह लोक सिद्ध वचन है।

चिकित्सक तथा मरीज गणधर वलय यंत्र व मंत्र के `झ्रौं` बीजाक्षर में औषधि ऋद्धि तथा रस ऋद्धि भी समाहित है। आचार्य भगवंत के अनुसार इसके स्मरण मात्र से सर्व रोग आधि-व्याधि समाप्त हो जाती है तथा भविष्य में नवीन रोग उत्पन्न नहीं होते। यदि चिकित्सक वर्ग नवरात्रि में इसे सिद्ध करके तथा इसकी विधि सीखकर चिकित्सा

क्षेत्र में औषधियों पर अपने मरीजों पर इसका प्रयोग करें तो इससे अभूतपूर्व अकल्पनीय लाभ होगा। इस मंत्र की ध्वनि आपके आभामण्डल, आपकी औषधि व आपके औषधालय को रोग निवारक आरोग्यवर्द्धक बना सकती है।

कृषक, व्यापारी व अन्य सभी :- 'झ्रौं' बीजाक्षर में अक्षीण आलय तथा अक्षीण महानस ऋद्धि भी समाहित है। इसकी विधिवत आराधना व प्रयोग से आपके आर्थिक संकट अवश्यमेव दूर हो सकते हैं। आपका भंडार, अक्षय भंडार हो सकता है आपके खेत श्रीयुक्त तथा धन-धान्य, फल, पुष्प आदि फसल महौषधि युक्त हो सकती है। इसकी आराधना व्यापारिक सभी विघ्न बाधाओं को दूर कर आपको मनवांछित लाभ व प्रगति प्रदान कर सकती है।

इसकी दीर्घ साधना, आराधना आपको अष्टांग निमित्त का ज्ञाता, सफल भविष्यवेत्ता ज्योतिषी बना सकती हैं।

राजनीतिक, प्रशासक तथा नौकरी पेशा वर्ग भी इसकी उपासना द्वारा अपने विघ्न संकटों को दूर कर मनवांछित लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

जिस घर में नित्य प्रतिदिन गणधर वलय मंत्र का जाप होता है। उसकी ध्वनि गुंजायमान होती है, वहाँ का वातावरण प्रेम, सौहार्द, वात्सल्य पूर्ण हो जाता है। उस घर के दैवीय प्रकोप, व्याधियाँ तथा सभी संकट दूर हो जाते हैं तथा वह घर धन-धान्य से परिपूर्ण, आरोग्यवर्द्धक बन जाता है। उस घर में स्वस्थ, मेधावी, पुण्यवान, सौभाग्यशाली, सदाचारी, प्रभावशाली, आदर्श संतान का जन्म होता है। (चौंसठ ऋद्धियों के नाम उनके कार्य विशेष को विस्तार से जानने के लिए अन्य ग्रंथ देखिये)

त्यागी, वैरागी, साधक, मुमुक्षु वर्ग :- गणधर वलय विधान की आराधना आपके आध्यात्मिक जीवन में आ रही सभी रुकावटों को दूर कर आपका प्रगति पथ प्रशस्त कर सकती है। इसकी साधना, रत्नत्रय, संयम, चारित्र को प्रदान करने वाली है। यदि आप रत्नत्रय प्राप्त करना चाहते हैं, सकल सिद्ध साधक बनना चाहते हैं और अंत में समाधिपूर्वक मरण करके अतिशीघ्र मोक्ष पाना चाहते हैं तो बिना विलम्ब किए शीघ्र ही परम पूज्य आचार्य श्री विशद सागर जी द्वारा रचित इस विधान का अनुष्ठान कर सातिशय पुण्यार्जन करिये।

"ब्र. आस्था दीदी"

लघु विनय पाठ-१

(दोहा)

पूजा विधि से पूर्व यह, पढ़ें विनय से पाठ ।
धन्य जिनेश्वर देवजी, कर्म नशाए आठ ॥1॥
शिव वनिता के ईश तुम, पाए केवल ज्ञान ।
अनन्त चतुष्टय धारते, देते शिव सोपान ।॥2॥
पीड़ा हारी लोक में, भव-दधि नाशनहार ।
ज्ञायक हो त्रयलोक के, शिवपद के दातार ॥3॥
धर्मामृत दायक प्रभो!, तुम हो एक जिनेन्द्र ।
चरण कमल में आपके, झुकते विनतं शतेन्द्र ।॥4॥
भविजन को भवसिन्धु में, एक आप आधार ।
कर्म बन्ध का जीव के, करने वाले क्षार ॥5॥
चरण कमल तव पूजते, विघ्न रोग हों नाश ।
भवि जीवों को मोक्ष पथ, करते आप प्रकाश ॥6॥
यह जग स्वारथ से भरा, सदा बढ़ाए राग ।
दर्श ज्ञान दे आपका, जग को विशद विरांग ।॥॥7॥
एक शरण तुम लोक में, करते भव से पार ।
अतः भक्त बन के प्रभो! आया तुमरे द्वार ॥8॥

मंगल पाठ

मंगल अर्हत् सिद्ध जिन, आचार्योपाध्याय संत ।
धर्मागम की अर्चना, से हो भव का अंत ॥1॥
मंगल जिनगृह बिम्ब जिन, भक्ती के आधार।
जिनकी अर्चा कर मिले, मोक्ष महल का द्वार ॥10॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं ॥

अथ पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु । णमोअरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं । ॐ ह्रीं अनादिमूल मंत्रेभ्योनमः। (पुष्पांजलिं क्षिपामि) चत्तारि मंगलं, अरिहन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो, धम्मो मंगलं । चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहन्ता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो, धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि शरणं पव्वज्जामि, अरिहंते शरणं पव्वज्जामि, सिद्धे शरणं पव्वज्जामि, साहू शरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तं, धम्मं शरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

मंगल विधान

शुद्धाशुद्ध अवस्था में कोई, णमोकार को ध्याये ।
पूर्ण अमंगल नशे जीव का, मंगलमय हो जाए ।।
सब पापों का नाशी है जो, मंगल प्रथम कहाए ।
विघ्न प्रलय विषनिर्विष शाकिनि, बाधा ना रह पाए ।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

अर्घ्यावली

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल साथ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य ले, पूज रहे जिन नाथ।।

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भ जन्म-तप-ज्ञान निर्वाण पंच कल्याणकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टाधिक सहस्त्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं श्री द्वादशांगवाणी प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, द्रव्यानुयोग नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं ढाईद्वीप स्थित त्रिऊन नव कोटि मुनि चरणकमलेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।5।।

पूजा प्रतिज्ञा पाठ

अनेकांत स्याद्वाद के धारी, अनंत चतुष्टय विद्यावान ।
मूल संघ में श्रद्धालू जन, का करने वाले कल्याण ॥
तीनलोक के ज्ञाता दृष्टा, जग मंगल कारी भगवान ।
भाव शुद्धि पाने हे स्वामी ! करता हूँ प्रभु का गुणगान ॥१॥
निज स्वभाव विभाव प्रकाशक, श्री जिनेन्द्र हैं क्षेम निधान ।
तीन लोकवर्ती द्रव्यों के विस्तृत ज्ञानी हे भगवान ॥
हे अर्हंत ! अष्ट द्रव्यों का, पाया मैंने आलंबन ।
होकर के एकाग्र चित्त मैं, पुण्यादिक का करूँ हवन ॥२॥

ॐ ह्रीं विधियज्ञ-प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलि क्षिपेत्।

स्वास्ति मंगल पाठ

वृषभ अजित संभव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व जिनेश ।
चन्द्र पुष्प शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य पूजूँ तीर्थेश ॥
विमलानन्त धर्म शांती जिन, कुन्थु अरह मल्ली दें श्रेय ।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वीर के पद में स्वस्ति करेय ॥

(पुष्पांजलि क्षिपेत्)

ऋषिवर ज्ञान ध्यान तप करके, हो जाते हैं ऋद्धीवान ।
मूलभेद हैं आठ ऋद्धि के, चौंसठ उत्तर भेद महान् ॥
बुद्धि ऋद्धि के भेद अठारह, जिनको पाके ऋद्धीवान ।
निष्पृह होकर करें साधना, 'विशद' करें स्व-पर कल्याण ॥१॥
ऋद्धि विक्रिया ग्यारह भेदों, वाले साधू ऋद्धीवान ।
नौ भेदों युत चारण ऋद्धी, धारी साूध रहे महान् ॥
तप ऋद्धी के भेद सात हैं, तप करते साधू गुणवान ।
मनबल वचन कायबल ऋद्धी, धारी साधू रहे प्रधान ॥२॥
भेद आठ औषधि ऋद्धी के, जिनके धारी सर्व ऋशीष ।
रस ऋद्धी के भेद कहे छह, रसास्वाद शुभ पाए मुनीश ॥
ऋद्धि अक्षीण महानस एवं, ऋद्धि महालय धर ऋषिराज ।
जिनकी अर्चा कर हो जाते, सफल सभी के सारे काज ॥३॥

(इति परम-ऋषिस्वस्ति मंगल विधानम्) (इति पुष्पांजलि क्षिपेत्)

मूलनायक सहित समुच्चय पूजा

स्थापन (दोहा)

देव शास्त्र गुरु देव नव, विद्यमान जिन सिद्ध ।
कृत्रिमा-कृत्रिम बिम्ब जिन, भू निर्वाण प्रसिद्ध ॥
सहस्त्रनाम दशधर्म शुभ, रत्नत्रय णमोकार ।
सोलह कारण का हृदय, आह्वानन् शत बार॥

ॐ ह्रीं अर्ह मूलनायक श्री..... सहित सर्व देव शास्त्र गुरु, नवदेवता, तीस चौबीसी, विद्यमान विंशति जिन, पंचमेरु, नन्दीश्वर, त्रिलोक सम्बन्धी, कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय, सहस्त्रनाम, सोलह कारण, दशलक्षण, रत्नत्रय, णमोकार, निर्वाण क्षेत्र गणधरादि मुनि समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(सखी छन्द)

यह निर्मल नीर चढ़ाएँ, जन्मादिक रुज विनशाएँ ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ ॥1॥

ॐ ह्रीं अर्ह मूलनायक श्री... सहित सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय नमः जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

सुरभित यह गंध चढ़ाएँ, भव सागर से तिर जाएँ ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ ॥2॥

ॐ ह्रीं अर्ह मूलनायक श्री... सहित सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय नमः भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीतिस्वाहा ।

अक्षत के पुंज चढ़ाएँ, शाश्वत अक्षय पद पाएँ ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ ॥3॥

ॐ ह्रीं अर्ह मूलनायक श्री... सहित सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय नमः अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

पुष्पित हम पुष्प चढ़ाएँ, कामादिक दोष नशाएँ ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ ॥4॥

ॐ ह्रीं अर्ह मूलनायक श्री... सहित सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय नमः कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

चरु यह रसदार चढ़ाएँ, हम क्षुधा रोग विनशाएँ ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ ॥5॥

ॐ ह्रीं अर्ह मूलनायक श्री... सहित सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय नमः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

रत्नोंमय दीप जलाएँ, हम मोह तिमिर विनशाएँ ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ ॥6॥

ॐ ह्रीं अहँ मूलनायक श्री... सहित सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय नमः महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

सुरभित यह धूप जलाएँ, कर्मों से मुक्ती पाएँ ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ ॥7॥

ॐ ह्रीं अहँ मूलनायक श्री... सहित सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय नमः अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीतिस्वाहा ।

फल ताजे शिव फलदायी, हम चढ़ा रहे हैं भाई ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ ॥8॥

ॐ ह्रीं अर्ह मूलनायक श्री... सहित सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय नमः मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

यह पावन अर्घ्य चढ़ाएँ, अनुपम अनर्घ्य पद पाएँ ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ ॥9॥

ॐ ह्रीं अर्ह मूलनायक श्री... सहित सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा- शांती पाने के लिए, देते शांती धार ।
हमको भी निज सम करो, कर दो यह उपकार ॥

(शांतये शांतिधारा)

दोहा - पुष्पांजलि करते यहाँ, लेकर पावन फूल ।
विशद भावना है यही, कर्म होंय निर्मूल ॥

(पुष्पांजलि क्षिपेत्)

जयमाला

दोहा - जैन धर्म जयवंत है, तीनों लोक त्रिकाल ।
गाते जैनाराध्य की, भाव सहित जयमाल ।।

(ज्ञानोदय छन्द)

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु के चरण नमन ।
जैन धर्म जिन चैत्य जिनालय, जैनागम का है अर्चन ॥1॥
भरतैरावत ढाई द्वीप में, तीन काल के जिन तीर्थेश ।
पंच विदेहों के तीर्थंकर, पूज रहे हम यहाँ विशेष ॥2॥
स्वर्ग लोक में और ज्योतिषी, देवों के जो रहे विमान ।
भावन व्यन्तर के गेहों में, रहे जिनालय महति महान ।।3।।
मध्य लोक में मेरु कुलाचल, गिरि विजयार्ध हैं इष्वाकार ।
रजताचल मानुषोत्तर गिरि तरु, नन्दीश्वर हैं मंगलकार ।।4।।
रुचक कुण्डल गिरि पे जिनगृह, सिद्ध क्षेत्र जो हैं निर्वाण ।
सहस्त्रकूट शुभ समवशरण जिन, मानस्तंभ हैं पूज्य महान ।5।।
उत्तम क्षमा मार्दव आदिक, बतलाए दश धर्म विशेष ।
रत्नत्रय युत धर्म ऋद्धियाँ, सहसनाम पावें तीर्थेश ।।6।।

दोहा- सोलह कारण भावना, और अठाई पर्व ।
पंच कल्याणक आदि हम, पूज रहें हैं सर्व ॥

ॐ ह्रीं अर्ह मूलनायक 1008 श्री......सहित वर्तमान भूत भविष्यत सम्बन्धी पंच भरत, पंच ऐरावत, पंच विदेह क्षेत्रावस्थित सर्व तीर्थंकर, नवदेवता, मध्य ऊर्ध्व एवं अधोलोक, नन्दीश्वर, पंचमेरु सम्बन्धित कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य चैत्यालय, गर्भ जन्म तप केवलज्ञान निर्वाण भूमि, तीर्थ क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, दशलक्षण, सोलहकारण, रत्नत्रयादि धर्म, ढाई द्वीप स्थित तीन कम नौ करोड़ गणधरादि मुनिश्वरेभ्यो सम्पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- जिनाराध्य को पूजकर, पाना शिव सोपान ।
यही भावना है विशद, पाएँ पद निर्वाण ॥

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री नवदेवता पूजा

स्थापना

हे लोक पूज्य अरिहंत नमन् ! हे कर्म विनाशक सिद्ध नमन् !
आचार्य देव के चरण नमन् अरु उपाध्याय को शत् वन्दन ।।
हे सर्व साधु है तुम्हें नमन् ! है जिनवाणी माँ तुम्हें नमन् !
शुभ जैन धर्म को करूँ नमन् जिनबिम्ब जिनालय को वन्दन ।।
नव देव जगत् में पूज्य 'विशद', है मंगलमय इनका दर्शन ।
नव कोटि शुद्ध हो करते हैं, हम नव देवों का आह्वानन ।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचायर्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह ! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ।

हम तो अनादि से रोगी हैं, भव बाधा हरने आये हैं।
हे प्रभु ! अन्तर तम साफ करो, हम प्रासुक जल भर लाये हैं ।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से सारे कर्म धुलें ।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्योः जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार ताप में जलकर हमने, अगणित अति दुख पाये हैं ।
हम परम सुगंधित चंदन ले, संताप नशाने आये हैं ।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से भव संताप गलें ।
हे नाथ ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्योः संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

यह जग वैभव क्षण भंगुर है, उसको पाकर हम अकुलाए ।
अब अक्षय पद के हेतु प्रभू, हम अक्षत चरणों में लाए ।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अक्षय शांति मिले ।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें ।।3 ।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्योः अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

बहु काम व्यथा से घायल हो, भव सागर में गोते खाये ।
हे प्रभु! आपके चरणों में, हम सुमन सुकोमल ले आये ।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अनुपम फूल खिलें ।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें ।।4 ।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्योः कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम क्षुधा रोग से अति व्याकुल, होकर के प्रभु अकुलाए हैं ।
यह क्षुधा मेटने हेतु चरण, नैवेद्य सुसुन्दर लाए हैं ।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती कर सारे रोग टलें ।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्योः क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोह तिमिर ने सदियों से, हमको जग में भरमाया है ।
उस मोह अन्ध के नाश हेतु, मणिमय शुभ दीप जलाया है ।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चा कर ज्ञान के दीप जलें ।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हसिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्योः मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

भव वन में ज्वाला धधक रही, कर्मों के नाथ सतायें हैं ।
हों द्रव्य भाव नो कर्म नाश, अग्नि में धूप जलायें हैं ।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, पूजा करके वसु कर्म जलें ।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें ।। 7 ।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्योः अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सारे जग के फल खाकर भी, हम तृप्त नहीं हो पाए हैं ।
अब मोक्ष महाफल दो स्वामी, हम श्रीफल लेकर आए हैं ।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ति कर हमको मोक्ष मिले ।
हे नाथ ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्योः मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने संसार सरोवर में सदियों से गोते खाये हैं ।
अक्षय अनर्घ पद पाने को, वसु द्रव्य संजोकर लाये हैं ।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों के, वन्दन से सारे विघ्न टलें ।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें ।।9 ।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्योः अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता नंद छन्द

नव देव हमारे, जगत सहारे, चरणों देते जल धारा ।
मन वच तन ध्याते, जिन गुण गाते, मंगलमय हो जग सारा ।।

।। शांतये शांति धारा ।।

ले सुमन मनोहर, अंजलि में भर, पुष्पांजलि दे हर्षाएँ ।
शिवमग के दाता, ज्ञानप्रदाता, नव देवों के गुण गाएँ ।।

।। दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

जाप्य (9, 27 या 108 बार)

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु, जिनधर्म, जिनागम, जिनचैत्य चैत्यालयेभ्यो नमः ।

जयमाला

दोहा – मंगलमय नव देवता, मंगल करें त्रिकाल ।
मंगलमय मंगल परम, गाते हैं जयमाल ।।

(चाल टप्पा)

अर्हन्तों ने कर्म घातिया, नाश किए भाई।
दर्शन ज्ञान अनन्तवीर्य सुख, प्रभु ने प्रगटाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई ।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई । जिन...।।1।।
सर्वकर्म का नाश किया है, सिद्ध दशा पाई ।
अष्टगुणों की सिद्धि पाकर, सिद्ध शिला जाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई ।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि... ।।2।।
पञ्चाचार का पालन करते, गुण छत्तिस पाई ।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, जैनाचार्य भाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि... ।।3।।
उपाध्याय है ज्ञान सरोवर, गुण पच्चिस पाई ।
रत्नत्रय को पाने वाले, शिक्षा दें भाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...।।4।।
ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, जैन मुनी भाई ।
वीतराग मय जिन शासन की, महिमा दिखलाई।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।

नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...।।5।।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरित्रमय, जैन धर्म भाई ।
परम अहिंसा की महिमा युत, क्षमा आदि पाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...।।6।।
श्री जिनेन्द्र की ओम् कार मय, वाणी सुखदाई ।
लोकालोक प्रकाशक कारण, जैनागम भाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...।।7।।
वीतराग जिनबिम्ब मनोहर, भविजन सुखदाई ।।
वीतराग अरु जैन धर्म की, महिमा प्रगटाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...।।8।।
घंटा तोरण सहित मनोहर, चैत्यालय भाई ।
वेदी पर जिन बिम्ब विराजित, जिन महिमा गाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई ।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...।।9।।

दोहा

नव देवों को पूजकर, पाऊँ मुक्ती धाम ।
"विशद" भाव से कर रहे, शत्-शत् बार प्रणाम् ।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य, चैत्यालयेभ्योः नमः महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

भक्ति भाव के साथ, जो पूजें नव देवता ।
पावे मुक्ती वास, अजर अमर पद को लहें ।।

इत्याशीर्वाद :

गणधर वलय स्तवन

दोहा - चौंसठ ऋद्धी धारते, अर्हत् गणीं ऋशीष ।

पूजा अर्चा कर विशद, झुका रहे हम शीश ।।

बुद्धी ऋद्धी से जीवों में, बुद्धि का हो पूर्ण विकास ।
फैला मोह तिमिर इस जग में, उसका हो जाता है ह्रास ।।
बल ऋद्धि के द्वारा तन में, बल की वृद्धि होय अपार ।
योद्धा कोई भी आ जावे, मुनिवर से न पावे पार ।।1।।
परम विक्रिया ऋद्धी पाकर, धारण करते रूप अनेक ।
ऋद्धी धारी मुनि के पद में, वन्दन करता माथा टेक ।
फूल पात तन्तु जल फल पर, चलते चारण ऋद्धीधार ।
गगन गमन भी करते मुनिवर, तिनको वन्दन बारम्बार ।।2।।
तपकर तप ऋद्धी प्रगटाते, जिससे तप करते हैं घोर।
उग्र महातप घोर पराक्रम, तप्त दीप्त तपते अतिघोर ।
औषधि ऋद्धीधारी मुनि के, तन का मल हो जाय विशेष ।
करने से स्पर्श व्याधियाँ, नशतीं क्षण में शीघ्र अशेष ।।3।।
रस ऋद्धीधारी मुनिवर के, कर में भोजन आते शुद्ध ।
सर्व रसों से पूरित होता, मंगलकारी पूर्ण विशुद्ध ।
ऋद्धी है अक्षीण महानश, जिससे वस्तु हो न क्षीण ।
अरू अक्षीण महालय ऋद्धी, में आलय होता अक्षीण ।।4।।

दोहा - तीर्थंकर गणधर मुनि, ऋद्धीधार ऋशीष ।

विशद झुकाते भाव से, जिन चरणों हम शीश ।।

24 तीर्थंकर गणधर मुनि पूजन - I

(स्थापना)

हे तीर्थंकर ! केवल ज्ञानी, सर्वज्ञ प्रभु जग हितकारी ।
हे गणधर स्वामी ! जिनवर के, तुम कृपा करो हे त्रिपुरारी ।।
निर्ग्रन्थ मुनीश्वर ऋद्धीधर, तव करते हैं हम आह्वानन ।
दो हमको शुभ आशीष विशद, हम करते हैं शत्-शत् वन्दन ।
हे नाथ ! पुजारी चरणों में, तव पूजा करने आए हैं।
पूजा को अनुपम द्रव्यों के, यह थाल सजाकर लाए हैं।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं असि अ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं ! अत्र अवतरावतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं असि आ उ सा अप्रतिचक्रेफट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं असि अ उ सा अप्रतिचक्रेफट विचक्राय झ्रौं झ्रौं ! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

(शम्भू छन्द)

जल पिया अनादि से हमने, पर तृषा शान्त न हो पाई ।
अति लगा हुआ है मिथ्या मल, हमने आतम न चमकाई ।।
अब जन्म जरा हो नाश मेरा, हम नीर चढ़ाने लाए हैं ।
हे नाथ ! आपके चरणों में, हम पूजा करने आए हैं।।1।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं ! नमः जलं निर्व स्वाहा।

चन्दन के वन घिस गये कई, पर शीतलता न मिल पाई।
सद् दर्शन की शुभ कली हृदय, में नहीं हमारे खिल पाई ।।
चन्दन घिसकर मलयागिरि का, हम आज चढ़ाने लाए हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में, हम पूजा करने आए हैं ।।2।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं ! नमः चंदनं निर्व स्वाहा।

भर-भर कर थाल तन्दुलों के, कई खाकर बहुत नशाए हैं।
अक्षय पद जो है अखण्ड वह, प्राप्त नहीं कर पाए हैं ।।
अब अक्षय पद के हेतु यहाँ, यह अक्षय अक्षत लाए हैं ।
हे नाथ ! आपके चरणों में, हम पूजा करने आए हैं।।3।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

तृष्णा की खाई है असीम, वह पूर्ण नहीं हो पाती है ।
है काम वासना दुखदायी, भव-भव में हमें सताती है ।।
हम काम वासना नाश हेतु, यह पुष्प सुगन्धित लाए हैं ।
हे नाथ ! आपके चरणों में, हम पूजा करने आए हैं।।4।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः पुष्पम् निर्व. स्वाहा।

यह क्षुधा वेदना जीवों को, सदियों से छलती आई है ।
खाकर मिष्ठान अनादी से, न तृप्ति हमें मिल पाई है ।
अब क्षुधा वेदना नाश हेतु, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं ।
हे नाथ ! आपके चरणों में, हम पूजा करने आए हैं।।5।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

जड़ दीप तिमिर का नाशक है, मिथ्यातम को न हरण करे ।
चैतन्य प्रकाशित करता वह, रत्नत्रय को जो ग्रहण करे ।।
अब विशद ज्ञान का दीप जले, हम दीप जलाकर लाए हैं ।
हे नाथ ! आपके चरणों में, हम पूजा करने आए हैं ।।6।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः दीपं नि. स्वाहा।

अग्नि में धूप जलाने से, आकाश सुवासित होता है ।
जब तीव्र कर्म का वेग बढ़े, चेतन शक्ति तब खोता है ।।
हम अष्ट कर्म के दहन हेतु, यह धूप जलाने लाए हैं ।
हे नाथ ! आपके चरणों में, हम पूजा करने आए हैं।।7।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं आ सि अ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः धूपं नि. स्वाहा।

यह सरस मधुर फल खाने से, रसना की चाह बढ़ाते हैं ।
हम चाह दाह के नाश हेतु, यह फल तव चरण चढ़ाते हैं ।।
हो मोक्ष महाफल प्राप्त हमें, तव हर्ष-हर्ष गुण गाए हैं ।।
हे नाथ ! आपके चरणों में, हम पूजा करने आए हैं ।।8।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं आ सि अ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः फलं नि. स्वाहा।

हमने अनर्घ पद पाने का, सदियों से भाव बनाया है ।
किन्तु विषयों में फँसने से, वह पद हमने न पाया है ।।
अब पद अनर्घ के हेतु प्रभो ! यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं ।
हे नाथ ! आपके चरणों में, हम पूजा करने आए हैं।।9।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं असि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- गणधरादि को पूजकर, करना चरण प्रणाम ।
शांतिधारा कर विशद, पाना है शिव धाम ।।

॥ शांतये शांतिधारा ॥

दोहा- गणधरादि मुनि के चरण, वन्दन बारम्बार ।
पुष्पाञ्जलि करके विशद, पाना भवदधि पार ।।

॥ पुष्पांञ्जलि क्षिपेत ॥

नोट – यदि आपको पूजा/विधान नहीं करना हो तो आप दीप/धूप/फलं/अर्घ्यं आदि जो भी द्रव्य चढ़ाना हो तो नमः के बाद उस द्रव्य का मन्त्र बोलकर 24+48=72 मन्त्रों द्वारा भी गणधर वलय अर्चना कर सकते हैं।

24 गणधर के अर्घ्य

(प्रथम वलयः)

वृषभादि जिन में हुए, गणधर ऋषि चौबीस ।
पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, चरण झुकाकर शीश ।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्)

(स्थापना)

हे तीर्थंकर ! केवल ज्ञानी, सर्वज्ञ प्रभु जग हितकारी ।
हे गणधर स्वामी ! जिनवर के, तुम कृपा करो हे त्रिपुरारी ।।
निर्ग्रन्थ मुनीश्वर ऋद्धीधर, तव करते हैं हम आह्वानन ।
दो हमको शुभ आशीष विशद, हम करते हैं शत्-शत् वन्दन ।
हे नाथ ! पुजारी चरणों में, तव पूजा करने आए हैं।
पूजा को अनुपम द्रव्यों के, यह थाल सजाकर लाए हैं।।

ॐ ह्रीं श्वीं श्रीं अर्हं असि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं अत्र अवतरावतर संवौषट् आह्वाननम् । ॐ ह्रीं श्वीं श्रीं अर्हं अ सि अ उ सा अप्रतिचक्रेफट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् । ॐ ह्रीं श्वीं श्रीं अर्हं असि अ उ सा अप्रतिचक्रेफट विचक्राय झ्रौं झ्रौं अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

ऋषभ नाथ के समवशरण में, 'वृषभसेन' गणधर स्वामी ।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धीधारी, हुए मोक्ष के अनुगामी ।।
दुःखहर्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करूणाकार ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार ।।1।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि अ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री वृषभनाथस्य `वृषभसेनादि` चतुरशीति गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नब्बे गणधर अजितनाथ के, `सिंहसेन` जी रहे प्रधान ।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धीधारी, का हम करते हैं सम्मान ॥
दुःखहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करूणाकार ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार ॥2 ॥

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं असि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री अजिनाथस्य `सिंहसेनादि` नवति गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर पञ्च एक सौ जानो, श्री सम्भव जिनवर के साथ ।
`चारुदत्त` गणधर मुनिवर कई, के पद झुका रहे हम माथ ॥
दुःखहर्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करूणाकार ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार ॥3॥

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं असि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री संभवनाथस्य `चारुदत्तादि` पंचोत्तरशतम् गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिनन्दन जिनवर के गणधर, `वज्रचमर` हैं एक सौ तीन ।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धीधारी, कहे गये हैं ज्ञान प्रवीण ॥
दुःखहर्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करूणाकार ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार ॥4॥

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं असि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री अभिनन्दन नाथस्य `वज्रचमरादि` त्रयाधिकशतं गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

`श्री वज्रादि` एक सौ सोलह, सुमतिनाथ के रहे गणेश ।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धीधारी, धारे स्वयं दिगम्बर भेष ॥
दुःखहर्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करूणाकार ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार ॥5॥

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं असि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री

सुमतिनाथस्य `वज्रादि` षोडशाधिकशतं गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चामरादि` एकादश एक सौ, पद्मप्रभु के हुए गणेश ।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धीधारी, धारे स्वयं दिगम्बर भेष ।।
दुःखहर्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करूणाकार ।
अष्ट द्रव्य को अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार ।।6।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं असि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री पद्मनाथस्य `चमरादि` दशाधिकशतं गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च ऊन इक शतक गणी थे, श्री सुपार्श्व जिनवर के साथ ।
`बलदत्तादी` अन्य मुनीश्वर, को हम झुका रहे हैं माथ ।।
दुःखहर्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करुणाकार ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार ।।7।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं असि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री सुपार्श्वनाथस्य `बलदत्तादि` पंचनवति गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन अधिक नब्बे गणधर थे, चन्द्र प्रभु के साथ महान् ।
`वैदर्भादि` अन्य मुनीश्वर, का हम करते हैं गुणगान ।।
दुःखहर्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करूणाकार ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार ।।8।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री चंद्रप्रभस्य `वैदर्भादि` त्रिनवति गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठ अधिक अस्सी गणधर शुभ, पुष्पदन्त के साथ रहे ।
`श्री नागादि` अन्य मुनीश्वर, श्रेष्ठ प्रभु के भक्त कहे ।।
विशद साधना करने वाले, ऋद्धिधारी हुए ऋशीष ।
उनके चरणों अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम अपना शीश ।।9।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः

श्री पुष्पदंतस्य 'नागादि' अष्टाशीति गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्ताधिक अस्सी गणधर शुभ, शीतलनाथ के हुए महान् ।
'कुंथु आदि' अन्य मुनीश्वर, का हम करते हैं सम्मान ।।
विशद साधना करने वाले, ऋद्धिधारी हुए ऋशीष ।
उनके चरणों अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम अपना शीश ।।10।।

ॐ ह्रीं झ्वीं श्रीं अर्हं असि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री शीतलनाथस्य 'कुंथादि' सप्ताशीति गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्रीधर्मादि' रहे सतत्तर, जिन श्रेयांस के गणधर साथ ।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धीधारी, को हम झुका रहे हैं माथ ।।
विशद साधना करने वाले, ऋद्धिधारी हुए ऋशीष ।
उनके चरणों अर्घ्य चढ़ाकर झुका रहे हम अपना शीश ।।11।।

ॐ ह्रीं झ्वीं श्रीं अर्हं असि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री श्रेयांसनाथस्य 'श्रीधर्मादि' सप्तसप्तति गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मंदर आदि छियासठ शुभ, गणधर वासुपूज्य के साथ ।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धीधारी, को हम झुका रहे हैं माथ ।।
विशद साधना करने वाले, ऋद्धिधारी हुए ऋशीष ।
उनके चरणों अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम अपना शीश ।।12।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं असि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री वासुपूज्यस्य 'मंदरादि' षट्षष्टिः गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विमल नाथ के 'जय' आदि शुभ, पचपन गणधर रहे महान् ।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धिधारी, को हम झुका रहे हैं माथ ।।
विशद साधना करने वाले, ऋद्धिधारी हुए ऋशीष ।
उनके चरणों अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम अपना शीश ।।13।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं असि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री

विमलनाथस्य `जयादि` पंचपंचाशत् गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अनन्त जिनवर के गणधर, आगम में बतलाए पचास ।
`अरिष्टादि` कई अन्य मुनीश्वर, के पद में हो मेरा वास ।।
विशद साधना करने वाले, ऋद्धिधारी हुए ऋशीष ।
उनके चरणों अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम अपना शीश ।।14।।

ॐ ह्रीं झ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री अनन्तनाथस्य `अरिष्टादिक` पंचाशत् गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

`अरिष्ट सेनादि` तेतालिस, धर्मनाथ के कहे गणेश ।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धिधारी, धारे स्वयं दिगम्बर भेष ।।
विशद साधना करने वाले, ऋद्धिधारी हुए ऋशीष ।
उनके चरणों अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम अपना शीश ।।15।।

ॐ ह्रीं झ्वीं श्रीं अर्हं असि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री धर्मनाथस्य `अरिष्टसेनादि` त्रिचत्वारिंशत् गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिनाथ स्वामी के गणधर, `चक्रायुध` आदी छत्तीस ।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धिधारी, के पद झुका रहे हम शीश ।।
चार ज्ञान के धारी अनुपम, गणधर हैं मुनियों के नाथ ।
भक्ति भाव से अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम पद में माथ ।।16।।

ॐ ह्रीं झ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री शांतिनाथस्य `चक्रायुधादि` षट्त्रिंशत् गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुन्थुनाथ जिनवर के गणधर, `स्वयंभ्वादि आदि थे` पैतीस ।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धिधारी, के पद झुका रहे हम शीश ।।
चार ज्ञान के धारी अनुपम, गणधर हैं मुनियों के नाथ ।
भक्ति भाव से अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम पद में माथ ।।17।।

ॐ ह्रीं झ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः

श्री कुंथुनाथस्य `स्वयंम्वादि` पंचत्रिंशत् गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरहनाथ जिनवर के गणधर, `श्री कुम्भ` आदी थे तीस ।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धिधारी, के पद झुका रहे हम शीश ।।
चार ज्ञान के धारी अनुपम, गणधर हैं मुनियों के नाथ ।
भक्ति भाव से अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम पद में माथ ।।18 ।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं असि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री अरहनाथस्य `श्री कुंभादि` त्रिंशत्णधरेभ्यों अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मल्लिनाथ जिनवर के गणधर, `श्री विशाख` आदि अठबीस ।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धिधारी, के पद झुका रहे हम शीश ।।
चार ज्ञान के धारी अनुपम, गणधर हैं मुनियों के नाथ ।
भक्ति भाव से अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम पद में माथ ।।19।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं असि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री मल्लिनाथस्य `विशाखाचार्यादि` अष्टाविंशति गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिसुव्रत के गणधर जानो, अष्टादश `मल्ली` आदी ।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धिधारी, हरते हैं सबकी व्याधी ।।
चार ज्ञान के धारी अनुपम, गणधर हैं मुनियों के नाथ ।
भक्ति भाव से अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम पद में माथ ।।20।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं असि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री मुनिसुव्रतनाथस्य `मल्लि` आदि अष्टादश गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमीनाथ के सत्रह गणधर, जानो तुम `सुप्रभआदि` ।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धिधारी, हरते हैं सबकी व्याधी ।।
चार ज्ञान के धारी अनुपम, गणधर हैं मुनियों के नाथ ।
भक्ति भाव से अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम पद में माथ ।।21।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं असि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री

नमिनाथस्य 'सुप्रभादि' सप्तदश गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वरदत्तादी' ग्यारह गणधर, नेमिनाथ के साथ कहे ।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धिधारी, के चरणों मम् माथ रहे ।।
चार ज्ञान के धारी अनुपम, गणधर हैं मुनियों के नाथ ।
भक्ति भाव से अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम पद में माथ ।।22।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री नेमिनाथस्य 'वरदत्तादि' एकादश गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर श्रेष्ठ 'स्वयंभू' आदि, पार्श्वनाथ के दश जानो ।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धिधारी, मुनियों को भी पहिचानो ।।
चार ज्ञान के धारी अनुपम, गणधर हैं मुनियों के नाथ ।
भक्ति भाव से अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम पद में माथ ।।23।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं असि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री पार्श्वनाथस्य 'स्वयंभ्वादि' दश गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'इन्द्रभूति' आदि गणधर थे, ग्यारह महावीर के साथ ।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धिधारी, के पद झुका रहे हम माथ ।।
चार ज्ञान के धारी अनुपम, गणधर हैं मुनियों के नाथ ।
भक्ति भाव से अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम पद में माथ ।।24।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं असि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री महावीरनाथस्य 'इन्द्रभूत्यादि' एकादश गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर चौबीस के गणधर, चौदह सौ उनसठ जानो ।
श्रेष्ठ ऋद्धियाँ पाने वाले, शुभ मंगलकारी मानो ।।
मोक्ष मार्ग के राही अनुपम, अतिशयकारी रहे ऋशीष ।
अर्घ्य चढ़ाकर उनके चरणों, झुका रहे हम अपना शीश ।।25।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभ सेनादि एकोन षष्ट्याधिक चतुर्दश शत गणधरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

48 ऋद्धियों के अर्घ्य

(द्वितीय वलयः)

सोरठा – णमो जिणाणं आदि, ऋषिवर पावें ऋद्धियां ।
पाने मरण समाधि, पुष्पाञ्जलि करते विशद ।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

हे तीर्थंकर ! केवल ज्ञानी, सर्वज्ञ प्रभु जग हितकारी ।
हे गणधर स्वामी ! जिनवर के, तुम कृपा करो हे त्रिपुरारी ।।
निर्ग्रन्थ मुनीश्वर ऋद्धीधर, तव करते हैं हम आह्वानन ।
दो हमको शुभ आशीष विशद, हम करते हैं शत्-शत् वन्दन ।
हे नाथ ! पुजारी चरणों में, तव पूजा करने आए हैं।
पूजा को अनुपम द्रव्यों के, यह थाल सजाकर लाए हैं ।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं असि अ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं अत्र अवतरावतर संवौषट् आह्वाननम् । ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रेफट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् । ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रेफट विचक्राय झ्रौं झ्रौं अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

`णमो जिणाणं` श्री जिनेन्द्र को, विशद भाव से करूँ नमन् ।
केवल ज्ञान ऋद्धि के धारी, जिनवर पद शत् शत् वन्दन ।।
तीर्थंकर जिन के गणधर की, गौरव गाथा गाते हैं ।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः दीपं/ धूपं/फलं/ अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

'णमो ओहि जिणाणं' कहकर, अवधि ज्ञान का करूँ मनन ।
अवधि ज्ञान के धारी मुनिवर, के चरणों में हो वन्दन ।।
तीर्थंकर जिन के गणधर की, गौरव गाथा गाते हैं ।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं ।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहि जिणाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः दीपं/ धूपं/फलं/ अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

कहकर 'णमो परमोहि जिणाणं', परमावधि का होय यतन ।
परम साधना करने वाले, मुनि के चरणों में वन्दन ।।
तीर्थंकर जिन के गणधर की, गौरव गाथा गाते हैं ।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहि जिणाणं विशिष्ट ऋद्धिधारक श्री गणधर स्वामिने नमः दीपं/ धूपं/फलं/ अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

बोल 'णमो सव्वोहि जिणाणं' सर्वावधि पाये जो ज्ञान ।
श्रेष्ठ ऋद्धि के धारी मुनिवर, सर्व लोक में रहे महान् ।।
तीर्थंकर जिन के गणधर की, गौरव गाथा गाते हैं ।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं ।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहि जिणाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः दीपं/ धूपं/फलं/ अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ 'णमो अणंतोहि जिणाणं' की महिमा है अपरम्पार ।
श्रेष्ठ ज्ञान धारी मुनिपद में, वन्दन मेरा बारम्बार ।।
तीर्थंकर जिन के गणधर की, गौरव गाथा गाते हैं ।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं ।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहि जिणाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः दीपं/ धूपं/फलं/ अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

'णमो कोट्ठ बुद्धीणं' पद से, कोट्ठ बुद्धिधारी जिन संत ।
उनके चरणों वन्दन करके, हो जाए कर्मों का अंत ।।
तीर्थंकर जिन के गणधर की, गौरव गाथा गाते हैं ।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं ।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्ठ बुद्धीणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः दीपं/ धूपं/फलं/ अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

'णमो बीज बुद्धीणं' पद में, बीज बुद्धि ऋद्धि धारी ।
श्रेष्ठ साधना करते मुनिवर, मन से होकर अविकारी ।।
तीर्थंकर जिन के गणधर की, गौरव गाथा गाते हैं ।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं ।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीज बुद्धीणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः दीपं/ धूपं/फलं/ अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

'ॐ णमो पादाणुसारीणं' पादानु सारिणी ऋद्धिवान ।
तप बल से यह ऋद्धि पाते, स्वयं जगाते हैं उपमान ।।
तीर्थंकर जिन के गणधर की, गौरव गाथा गाते हैं ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते हैं ।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो पदाणुसारीणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः दीपं/ धूपं/फलं/ अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

'ॐ णमो संभिण्ण सोदारणं', संभिन्न श्रोतृत्त्व के धारी ।
उनके चरणों वन्दन करते, हम भी होकर अविकारी ।।
तीर्थंकर जिन के गणधर की, गौरव गाथा गाते हैं ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते हैं ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो संभिण्ण सोदारणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः दीपं/ धूपं/फलं/ अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

`णमो सयं बुद्धाणं` कहकर, स्वयं बुद्धि ऋद्धि धारी ।
मुनिवर के चरणों में वन्दन, करते हम मंगलकारी ।।
तीर्थंकर जिन के गणधर की, गौरव गाथा गाते हैं ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते हैं ।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयं बुद्धाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः दीपं/ धूपं/फलं/ अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

`णमो पत्तेय बुद्धाणं` कहकर, प्रत्येक बुद्धि ऋद्धि पाऊँ ।
श्रेष्ठ साधना करूँ भाव से, इस भव में न भटकाऊँ ।।
तीर्थंकर जिन के गणधर की, गौरव गाथा गाते हैं ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते हैं ।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेय बुद्धाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः दीपं/ धूपं/फलं/ अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

`णमो बोहिय बुद्धाणं` कहते, बोधि पाने हेतु महान् ।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, उनका हम करके गुणगान ।।
तीर्थंकर जिन के गणधर की, गौरव गाथा गाते हैं ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते हैं ।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहिय बुद्धाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः दीपं/ धूपं/फलं/ अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

`ॐ णमो उजु मदीणं` कहके, ऋजु मति मनः पर्यय ज्ञान ।
परम साधना करने वाले, मोक्षमहल में करें प्रयाण ।।
तीर्थंकर जिन के गणधर की, गौरव गाथा गाते हैं ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते हैं ।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो उजु मदीणं विशिष्ट ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री गणधर स्वामिने नमः दीपं/ धूपं/फलं/ अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

कहके 'णमो विउल मदीणं', विपुल मति पा लेते ज्ञान ।
आतम ध्यान लगाने वाले, पा जाते हैं केवल ज्ञान ।।
तीर्थंकर जिन के गणधर की, गौरव गाथा गाते हैं ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते हैं ।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउल मदीणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः दीपं/ धूपं/फलं/ अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

'ॐ णमो दश पुव्वीणं' कह, दश पूर्वों का पाऊँ ज्ञान ।
विशद भाव से जिन मुद्रा का, करता रहूँ नित्य मैं ध्यान ।।
तीर्थंकर जिन के गणधर की, गौरव गाथा गाते हैं ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते हैं ।।15।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो दश पुव्वीणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः दीपं/ धूपं/फलं/ अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

'ॐ णमो चउदश पुव्वीणं', चौदह पूर्वों के धारी ।
मुनिवर की शुभ करें वन्दना, होकर हम भी अविकारी ।।
तीर्थंकर जिन के गणधर की, गौरव गाथा गाते हैं ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते हैं ।। 16।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो चउदश पुव्वीणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः दीपं/ धूपं/फलं/ अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

(सोरठा)

णमो अट्ठंग महा, निमित्त कुशलाणं जानिए ।
महा निमित्तक ज्ञान, मुनिवर पाते मानिए ।।
करते हम कर जोर, वन्दन उनके चरण में ।
होके भाव विभोर, शिव पद पाने के लिए ।।17।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठंग महाणिमित्त कुशलाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः दीपं/ धूपं/फलं/ अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

(चाल टप्पा)

णमो विउव्व इड्ढि पत्ताणं`, ऋद्धिधर स्वामी ।

ऋद्धि सिद्धि का दान हमें दो, मुक्ति पथ गामी ।।

मुनीश्वर हे अन्तर्यामी!

सम्यक् तप को पाने वाले, त्रिभुवन के स्वामी मुनि... ।।18।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउव्व इड्ढि पत्ताणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः दीपं/ धूपं/फलं/ अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

ध्याऊँ `णमो विज्जाहराणं`, ऋद्धिधर नामी।

इसको पाने वाला बनता, मुक्ति पथ गामी ।।

मुनीश्वर हे अन्तर्यामी !

सम्यक् तप को पाने वाले, त्रिभुवन के स्वामी मुनि...।।1911

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विजाहराणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः दीपं/ धूपं/फलं/ अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

`णमो चारणाणं` ऋद्धिधर, हैं त्रिभुवन नामी ।

उनकी भक्ति करने वाला, हो उसका स्वामी ।

मुनीश्वर हे अन्तर्यामी !

सम्यक् तप को पाने वाले, त्रिभुवन के स्वामी मुनि...।।20।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः दीपं/ धूपं/फलं/ अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

`णमो पण्ण समणाणं` जानो, मुक्ति पथ गामी ।

प्रज्ञा श्रमण ऋद्धि के धारी, हैं त्रिभुवन नामी ।।

मुनीश्वर हे अन्तर्यामी !

सम्यक् तप को पाने वाले, त्रिभुवन के स्वामी मुनि...।।21।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्ण समणाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः दीपं/ धूपं/फलं/ अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

`णमो आगास गामीणं` वाले, ऋद्धि के स्वामी ।
गगन गमन करते हैं भाई, मुक्ति पथगामी ॥
मुनीश्वर हे अन्तर्यामी !
सम्यक् तप को पाने वाले, त्रिभुवन के स्वामी मुनि... ॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगास गामीणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः दीपं/ धूपं/फलं/ अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

`णमो आसी विसाणं` ऋद्धि, मुनिवर ने पाई ।
श्रेष्ठ ऋद्धि को धार गुरु ने, प्रभुता दिखलाई ॥
मुनीश्वर पूजों हो भाई!
सम्यक् तप को पाने वाले, ऋषिवर सुखदाई मुनि... ॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसी विसाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः दीपं/ धूपं/फलं/ अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

`णमो दिट्ठी विसाणं`, ऋद्धि मुनिवर ने पाई ।
मरण देखते होय जीव का, देखें न भाई ॥
मुनीश्वर पूजों हो भाई!
सम्यक् तप को पाने वाले, ऋषिवर सुखदाई मुनि...॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठी विसाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः दीपं/ धूपं/फलं/ अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

`णमो उग्ग तवाणं` जानो, ऋद्धि यह भाई।
उग्र तपों को पाते मुनिवर, यह ऋद्धि पाई ॥
मुनीश्वर पूजों हो भाई!
सम्यक् तप को पाने वाले, ऋषिवर सुखदाई मुनि...॥25॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः दीपं/ धूपं/फलं/ अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

'णमो दित्त तवाणं' ऋद्धि, से मुनीवर भाई ।
दीप्त तपों को अतिशय तपते, मुनीवर सुखदाई ।।
मुनीश्वर पूजों हो भाई!
सम्यक् तप को पाने वाले, ऋषिवर सुखदाई मुनि...।।26।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्त तवाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः दीपं/ धूपं/फलं/ अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

'णमो तत्त तवाणं' ऋद्धि, से ऋषिवर भाई ।
कठिन-कठिन तप करके मुनिवर, अतिशय दिखलाई ।।
मुनीश्वर पूजों हो भाई !
सम्यक् तप को पाने वाले, ऋषिवर सुखदाई मुनि... ।।27।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्त तवाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः दीपं/ धूपं/फलं/ अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

'णमो महा तवाणं' ऋद्धि, पाकर के भाई ।
उत्तम से उत्तम तप तपते, हैं ऋषि सुखदाई ।।
मुनीश्वर पूजों हो भाई!
सम्यक् तप को पाने वाले, ऋषिवर सुखदाई मुनि... ।।28।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो महा तवाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः दीपं/ धूपं/फलं/ अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

'णमो घोर तवाणं' ऋद्धि, ऋषिवर जो पाई।
घोर परीषह सहकर भी मुनि, तप करते भाई ।।
मुनीश्वर पूजों हो भाई !
सम्यक् तप को पाने वाले, ऋषिवर सुखदाई मुनि... ।।29।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर तवाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः दीपं/ धूपं/फलं/ अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

'णमो घोर गुणाणं' जानो, ऋद्धि सुखदाई ।
श्रेष्ठ गुणों को पाते ऋषिवर, ऋद्धि यह पाई ।।
मुनीश्वर पूजों हो भाई!
सम्यक् तप को पाने वाले, ऋषिवर सुखदाई मुनि... ।।30।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः दीपं/ धूपं/फलं/ अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

'णमो घोर परक्कमाणं' यह, ऋद्धि सुखदाई ।
घोर पराक्रम पाते मुनिवर, यह ऋद्धि पाई ।।
मुनीश्वर पूजों हो भाई!
सम्यक् तप को पाने वाले, ऋषिवर सुखदाई मुनि...।।31।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर परक्कमाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः दीपं/ धूपं/फलं/ अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

'णमो घोर गुण बंभयारीणं', ऋद्धि धर भाई ।
घोर ब्रह्मचर्य पालन करते, अतिशय सुखदाई ।।
मुनीश्वर पूजों हो भाई!
सम्यक् तप को पाने वाले, ऋषिवर सुखदाई मुनि... ।।32।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर गुण बंभयारीणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः दीपं/ धूपं/फलं/ अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

चाल-छन्द

'णमो आमोसहि पत्ताणं' बोल बोल मैटो सब गम ।
आमर्षौषधि के धारी, ऋषिवर जग में उपकारी।
मुनि की जय जयकार करो, चरणों में नित शीश धरो।
उनका जो भी ध्यान करें, आतम का कल्याण करें ।।33।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमोसहि पत्ताणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः दीपं/ धूपं/फलं/ अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

'णमो खेल्लोसहि पत्ताणं', ऋद्धि पाकर मैटो गम ।
थूक लार मुख के न्यारे, रोग नशाते हैं सारे ।।
मुनि की जय जयकार करो, चरणों में नित शीश धरो।
उनका जो भी ध्यान करें, आतम का कल्याण करें ।।34।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो खेल्लोसहि पत्ताणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः दीपं/ धूपं/फलं/ अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

'णमो जल्लोसहि पत्ताणं', मोह त्याग कर धारो सम ।
ऋषि के तन का जल्ल अहा, रोग मेटता पूर्ण रहा ।।
मुनि की जय जयकार करो, चरणों में नित शीश धरो ।
उनका जो भी ध्यान करें, आतम का कल्याण करें ।।35।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहि पत्ताणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः दीपं/ धूपं/फलं/ अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

'णमो विप्पोसहि पत्ताणं', ऋद्धि होती है सक्षम ।
मल औषधि बन जाता है, सारे रोग नशाता है ।।
मुनि की जय जयकार करो, चरणों में नित शीश धरो ।
उनका जो भी ध्यान करें, आतम का कल्याण करें ।।36।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विप्पोसहि पत्ताणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः दीपं/ धूपं/फलं/ अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

'णमो सव्वोसहि पत्ताणं', पाते हैं जो धारें यम ।
सर्वौषधि ऋद्धि धारी, व्याधि मैटते हैं सारी ।।
मुनि की जय जयकार करो, चरणों में नित शीश धरो ।
उनका जो भी ध्यान करें, आतम का कल्याण करें ।।37।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहि पत्ताणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः दीपं/ धूपं/फलं/ अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

शेर–छन्द

`णमो मण बलीणं` यह, ऋद्धि पाए हैं ।
मन बल से श्रेष्ठ ऋद्धि, ऋषिवर जगाए हैं ।।
ऋषि के चरण का वन्दन, करते जो भाव से ।
संसार पार वे हों, संयम की नाव से ।। 38।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो मण बलीणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः दीपं/ धूपं/फलं/ अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

`णमो वचि बलीणं`, यह ऋद्धि जानिए ।
वचनों में शक्ति मिलती, ऋषि को ये मानिए ।।
ऋषि के चरण का वन्दन, करते जो भाव से ।
संसार पार वे हों, संयम की नाव से ।।39।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचि बलीणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः दीपं/ धूपं/फलं/ अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

`णमो काय बलीणं`, इस ऋद्धि के धनी ।
पाते हैं मुनि शक्ति, ऋद्धि से अति घनी ।।
ऋषि के चरण का वन्दन, करते जो भाव से ।
संसार पार वे हों, संयम की नाव से ।।40।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो काय बलीणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः दीपं/ धूपं/फलं/ अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

`णमो खीर सवीणं`, यह ऋद्धि जो पाए ।
रुखा आहार कर में, शुभ क्षीर सा बनाए ।।
ऋषि के चरण का वन्दन, करते जो भाव से ।
संसार पार वे हों, संयम की नाव से ।।41।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीर सवीणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः दीपं/ धूपं/फलं/ अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

`णमो सप्पि सवीणं`, इस ऋद्धि के धारी ।
रुखा आहार पाते, शुभ घृत सम भारी ।।
ऋषि के चरण का वन्दन, करते जो भाव से ।
संसार पार वे हों, संयम की नाव से ।।42।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पि सवीणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः दीपं/ धूपं/फलं/ अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

`णमो महुर सवीणं`, यह ऋद्धि जानिए ।
मधुर आहार रुक्ष भी, हो जाए मानिए ।।
ऋषि के चरण का वन्दन, करते जो भाव से ।
संसार पार वे हों, संयम की नाव से ।।43।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुर सवीणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः दीपं/ धूपं/फलं/ अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

`णमो अमिय सवीणं`, यह ऋद्धि पाए हैं ।
आहार रुक्ष अमृत, जैसा बनाए हैं ।।
ऋषि के चरण का वन्दन, करते जो भाव से ।
संसार पार वे हों, संयम की नाव से ।।44।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमिय सवीणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः दीपं/ धूपं/फलं/ अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

आर्या–छन्द

`णमो अक्खीण महाणसाणं` यह, ऋद्धि है अतिशयकारी ।
कमें नहीं आहार जहाँ पर, भोजन लेवें अनगारी ।।
जिन मुनि की पूजा करने यह, द्रव्य सजाकर लाए हैं ।।
भक्ति भाव से शीश झुकाकर, वन्दन करने आए हैं ।।45।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीण महाणसाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः दीपं/ धूपं/फलं/ अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

'ॐ णमो वड्ढमाणाणं' यह, ऋद्धि मुनिवर ने पाई ।
केवल ज्ञान प्राप्त होने तक, ऋद्धि बढ़ती सुखदाई ॥
जिन मुनि की पूजा करने यह, द्रव्य सजाकर लाए हैं ॥
भक्ति भाव से शीश झुकाकर, वन्दन करने आए हैं ॥46॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः दीपं/ धूपं/फलं/ अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

'ॐ णमो सिद्धायदणाणं' यह, ऋद्धि ऋषिवर जी पाते ।
सिद्धायतन के दर्श मुनि को, बैठे-बैठे हो जाते ॥
जिन मुनि की पूजा करने यह, द्रव्य सजाकर लाए हैं ॥
भक्ति भाव से शीश झुकाकर, वन्दन करने आए हैं ॥47॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सिद्धाय दणाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः दीपं/ धूपं/फलं/ अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा।

'णमो भयवदोमहदि महावीर वड्ढमाणं, बुद्धि ऋद्धि धारी ।
वर्द्धमान महावीर प्रभु सम, बन जाते हैं अविकारी ॥
जिन मुनि की पूजा करने यह, द्रव्य सजाकर लाए हैं॥
भक्ति भाव से शीश झुकाकर, वन्दन करने आए हैं ॥48॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो भयवदोमहदि महावीर वड्ढमाणं बुद्धि विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः दीपं/ धूपं/फलं/ अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

गणधर वलय में णमो जिणाणं, आदि ऋद्धियाँ कहीं महान् ।
अड़तालिस यह मंत्र श्रेष्ठ हैं, भाव सहित कीन्हा गुणगान ॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, करते हम शत-शत् वन्दन ।
मुक्ति पद को प्राप्त करें हम, किया भाव से यह अर्चन ॥49॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं आदि विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः दीपं/ धूपं/फलं/ पूर्णार्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

जाप : ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं श्री गणधरेभ्यो नमः ।

समुच्चय जयमाला

दोहा- तीर्थंकर गणधर मुनी, होते पूज्य त्रिकाल ।
चौंसठ ऋद्धीवान की, गाते हैं जयमाल ।।

(शम्भू छन्द)

परिशुद्ध हृदय जिनका निर्मल, गुणगण के अनुपम कोष रहे ।
तीर्थंकर जिनके गण नायक, आगम में गणधर देव कहे ।।
जो मति श्रुत अवधि मनःपर्यय, शुभ चार ज्ञान के धारी हैं ।
जो भौतिक तत्त्वों के ज्ञाता, अरु पूर्ण रूप अविकारी हैं ।।1।।
स्याद्वाद ज्ञान गंगाधारी, पर मत का खण्डन करते हैं ।
अनेकांत भाव पाने वाले, गुरु पञ्च महाव्रत धरते हैं ।।
जो अंग पूर्व के धारी हैं, अष्टांग निमित्त के ज्ञाता हैं ।
शुभ दिव्य देशना झेल रहे, जग में भव्यों के त्राता हैं ।।2।।
गुरु अष्ट ऋद्धि के धारी हैं, जिन प्रज्ञा श्रमण कहाते हैं ।
शुभ स्वप्न शकुन ज्योतिष ज्ञाता, तन परमौदारिक पाते हैं ।।
जो अनेकांत के धारी हैं, एकान्त ध्यान में लीन रहे।
हैं परम अहिंसा व्रतधारी, गणधर जिनेन्द्र के श्रेष्ठ कहे ।।3।।
गुरु घोर पराक्रम के धारी, जो घोर परीषह सहते हैं ।
हर एक विषमता को सहकर, जो शान्त भाव से रहते हैं ।।
तीर्थंकर जिन के दिव्य वचन, ॐकार रूप से आते हैं ।
किरणों की प्रखर रोशनी सम, गणधर में आन समाते हैं ।।4।।
जिन वचन महोदधि है अनन्त, जिसका होता न अंत कहीं ।
शत् इन्द्र चक्रवर्ति आदी, जिन संत समझते पूर्ण नहीं ।।
गणधर गूंथित जैनागम ही, भवि जीवों का ज्ञान प्रदाता है ।
रत्नत्रय धर्म प्रदायक है, जो मोक्ष महल का दाता है ।।5।।
जिनधर्म धारकर भवि प्राणी, कर्मों का पूर्ण विनाश करें ।

फिर अनन्त चतुष्टय को पाकर, जिन केवल ज्ञान प्रकाश करें ।।

हम तीन काल के तीर्थंकर, गणधर को शीश झुकाते हैं ।

अब गुण पाने जिन गणधर के, हम चरण शरण को पाते हैं।।6।।

(छन्द घत्तानन्द)

जिन पद अनुगामी, गणधर स्वामी, मोक्षमार्ग के पथगामी ।

जय गण के स्वामी, तुम्हें नमामी, द्रव्य भाव श्रुतधर नामी ।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री चतुर्विंशति तीर्थंकराणां श्री वृषभसेनादि एक सहस्र चतुर्शतक द्विपंचाशत गणधरेभ्यो पूर्ण अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- तीर्थंकर के पद नमूँ, गणधर करूँ प्रणाम ।
पुष्पाञ्जलि करके विशद, पाऊँ मुक्तिधाम ।।

।। पुष्पाञ्जलि क्षिपेत् ।।

गणधर जी की आरती

तर्ज - ॐ जय.....

ॐ जय गणधर देवा ! स्वामी जय गणधर देवा ।
ऋषभ सेन आदिक जिनवर जी, भव सिन्धू खेवा ॥
ॐ जय गणधर देवा ॥टेक॥
श्री सम्मेद शिखर है पावन, शास्वत तीर्थ कहा-2।
तीर्थंकर जो हुए भूत में-2, उनका धाम रहा ॥ ॐ जय...॥1॥
प्रथम कूँट श्री गणधर जी की, पावन कहलाई -2 ।
गणधर प्रथम सभी जिनवर के-2, शुभ मंगलदाई ॥ॐ जय...॥2॥
जिनकी स्मृति रूप यहाँ पर, चौबिस चरण कहे-2।
ग्यारह गणधर वीर प्रभु जी-2, के भी चरण रहे ॥ॐ जय...॥3॥
चौंतिस चरण पूज्य हैं पावन, चरणों सिर नाते -2 ।
विशद भाव से आरती करके-2, तव महिमा गाते ॥ॐ जय...॥4॥
तीर्थ राज का वन्दन करके, अतिशय पुण्य फले-2 ।
जिन गणधर की आरती करके-2, ज्ञान का दीप जले ॥ॐ जय...॥5॥

प्रशस्ति

दोहा - परमेष्ठी को नमन् कर, जिन श्रुत को उरधार ।

चैत्य जिनालय धर्म को, वन्दन बारम्बार ।।

(चौपाई छन्द)

मध्य लोक के मध्य में जानो, जम्बूद्वीप श्रेष्ठ पहिचानो ।
आर्य खण्ड उसमें सुखदायी, भारत देश रहा शुभ भाई ।।१॥
वर्तमान चौबीसी जानो, तीर्थंकर की पदवी मानो ।
दिव्य देशना देते भाई, भवि जीवों को है सुखदाई ।।२॥
महिमा अपरम्पार कही है, जग में तारण हार रही है ।
ॐकार मय भाई जानो, समवशरण में खिरती मानो ।।३॥
गणधर जो भी होते भाई, दिव्य ध्वनि झेलें सुखदाई ।
होते हैं जो ऋद्धीधारी, चार ज्ञान के हैं अधिकारी ।।४॥
मोक्ष मार्ग के होते नेता, रत्नत्रय के शुभ अभिनेता ।
भवि जीवों को राह दिखाते, मोक्षमार्ग पर बढ़ते जाते ।।५॥
उनकी भक्ती करने आये, विशद भाव से शीश झुकाए ।
हमको मोक्ष मार्ग मिल जाए, उर में ज्ञान कली खिल जाए।।६॥
सम्वत् बीस सौ चौसठ भाई, अश्विन शुक्ल की चौदस पायी ।
दो हजार सन् आठ कहा है, वर्षायोग का समय रहा है ।।७॥
मालपुरा नगरी है पावन, पार्श्वनाथ मंदिर मन भावन ।
गणधर वलय की पूजा भाई, रचना पूर्ण यहाँ हो पाई ।।८॥
मिलकर सभी विधान कराओ, भाई अतिशय पुण्य कमाओ ।
अपना जीवन सफल बनाओ, अनुक्रम से फिर मुक्ति पाओ ।।९॥
अक्षर मात्रा की त्रुटि कोई, इसमें जो भी पाओ सोई ।
ज्ञानी जन सब शोध कराएँ, हमको उसका बोध कराएँ ।।१०॥

दोहा- अन्तिम है यह भावना, होय कर्म का अन्त ।

संयम धारणकर विशद, बनें जीव शिव संत ।।

"1452 गणधरों की महाअर्चना"

कीजे गणधर वलय विधान, संकट टल जाएँ सारे ।
कीजे समवशरण का ध्यान, जागे उर में उजियारे ।।
कीजे...........।।1॥
विशद भाव से पूजन करके, करो स्वयं का ध्यान ।
शुद्धातम का आलंबन ले, करो स्वयं कल्याण ।।
कीजे...........।।2॥
ऋद्धि सिद्धियाँ सकल सिद्ध हो, जाएँगी तत्काल ।
सिद्ध स्वपद निश्चित पाओगे, पावन परम विशाल ।।
कीजे...........।।3॥
गणधर वलय की पूजा करके निज सौभाग्य जगाएँ ।
विशद पुण्य का योग प्राप्त कर, मोक्ष मार्ग अपनाएँ ॥
कीजे............॥4॥
तीर्थंकर जो हुए अभी तक, एवं गणधर स्वामी ।
भाव सहित करके विधान वे, हुए हैं अन्तर्यामी ॥
कीजै...........॥5॥

24 तीर्थंकरों के अलग-अलग गणधर शिष्य 1452 थे ।

श्री आदिनाथ के **84** गणधर, अजितनाथ के 90 गणधर, श्री संभवनाथ के 105 गणधर, श्री अभिनन्दन नाथ के 103 गणधर, श्री सुमतिनाथ के 116 गणधर, श्री पद्मप्रभु के 110, श्री सुपार्श्वनाथ के 95, श्री चन्द्रप्रभु के 93, श्री पुष्पदंत के 88, श्री शीतलनाथ के 81, श्री श्रेयांश नाथ के 77, श्री वासुपूज्य के 66, श्री विमलनाथ के 55, श्री अनन्तनाथ के 50, श्री धर्मनाथ के 43, श्री शांतिनाथ के 36, श्री कुंथुनाथ के 35, श्री अरहनाथ के 30, श्री मल्लिनाथ के 28, श्री मुनिसुव्रतनाथ के 18, श्री नमिनाथ के 17, श्री नेमिनाथ के 11, श्री पार्श्वनाथ के 10, श्री महावीर के 11 इस प्रकार 24 तीर्थंकर के 1452 गणधर होते हैं।

चौदह सौ बावन गणधर समुच्चय पूजा - II

स्थापना (हरिगीतिका–छन्द)

अर्हन्त घाती कर्म नाशी, पाए केवल ज्ञान हैं ।
हैं भक्त गणधर देव उनके, भक्त जन के प्राण हैं ।।
हैं ऋद्धिधारी जो अलौकिक, पूजते जिन के चरण ।
आह्वान हम करते हृदय में, भक्त को लीजे शरण ।।

ॐ ह्रीं श्री चतुःषष्टिः ऋद्धि सम्पन्न तीर्थंकर गणधर महामुनीन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणं।

(ज्ञानोदय छन्द)

चैतन्य वैभव प्राप्त करने, यह चढ़ाते नीर हैं ।
ले भक्त नौका अर्चना की, पा रहे भव तीर हैं ।।
जन्मादि रुज हरने यहाँ शुभ, नीर अर्पित कर रहे ।
जिनदेव गणधर ऋद्धियों की, वन्दना हम कर रहे ।।1।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः चतुःषष्ठिः ऋद्धि सम्पन्न तीर्थंकर गणधराय नमः जलं निर्व. स्वाहा।

संसार के जलते सदन में, हम हुए संतप्त हैं ।
हम मोह की मदिरा में गाफिल, हो सके न तृप्त हैं ।।
अब मोह ज्वाला शांत करने, गंध अर्पित कर रहे ।
जिनदेव गणधर ऋद्धियों की, वंदना हम कर रहे ।।2।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्वीं श्रीं अर्हं असि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः चतुःषष्ठिः ऋद्धि सम्पन्न तीर्थंकर गणधराय नमः चंदनं निर्व. स्वाहा।

भण्डार अक्षय निज गुणों का, आज तक सोचा नहीं ।
आकांक्षी हो भटके जगत में, खो रहे मौका सही ।

सिद्धीश के हम ईश बनने, पुंज अर्पित कर रहे ।।

जिनदेव गणधर ऋद्धियों की, वन्दना हम कर रहे ।।3।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः चतुःषष्ठिः ऋद्धि सम्पन्न तीर्थंकर गणधराय नमः अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

शुभ पुष्प खिलते ज्ञान तरु में, ब्रह्मचारी बाग में ।

मुक्ति ललना नत नयन हो, ताकती अनुराग में ।।

अब्रह्म का कालुष हटाने, पुष्प अर्पित कर रहे ।

जिनदेव गणधर ऋद्धियों की, वन्दना हम कर रहे ।।4।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः चतुःषष्ठिः ऋद्धि सम्पन्न तीर्थंकर गणधराय नमः पुष्पं निर्व. स्वाहा।

आध्यात्म में होता रमण तब, भोग तृष्णा भागती ।

आनन्द पाने निज गुणों का, भक्ति की रुचि जागती ।।

हो अन्त तृष्णा का अतः, नैवेद्य अर्पित कर रहे ।

जिनदेव गणधर ऋद्धियों की, वन्दना हम कर रहे ।।5।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः चतुःषष्ठिः ऋद्धि सम्पन्न तीर्थंकर गणधराय नमः नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

अज्ञान मिथ्या मोह मल का, तिमिर छाया जो सघन ।

निज चेतना में ज्ञान की लौ, प्राप्त करके हों मगन ।।

अज्ञान तम का दुःख हरने, आरती हम कर रहे ।

जिनदेव गणधर ऋद्धियों की, वन्दना हम कर रहे ।।6।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः चतुःषष्ठिः ऋद्धि सम्पन्न तीर्थंकर गणधराय नमः दीपं निर्व. स्वाहा।

सबको सताते कर्म लेकिन, जो जलाते कर्म को ।

वे जीव ही चिरूप होकर, प्रकट करते धर्म को ।।

हम धर्म से निज कर्म हरने, धूप अर्पित कर रहे ।

जिनदेव गणधर ऋद्धियों की, वन्दना हम कर रहे ।।7।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः चतुःषष्ठिः ऋद्धि सम्पन्न तीर्थंकर गणधराय नमः धूपं निर्व. स्वाहा।

जिन भक्ति से निज तृप्ति कारी, मोक्ष फल अतिशय लगें ।

जो चित् स्वरूपी चेतना के, सरस में रत हो पगें ।।

हो मुक्ति का फल भक्ति करके, फल अतः अर्पित करें ।

जिनदेव गणधर ऋद्धियों की, वन्दना हम कर रहे ।।8।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः चतुःषष्ठिः ऋद्धि सम्पन्न तीर्थंकर गणधराय नमः फलं निर्व. स्वाहा।

कर अष्ट द्रव्यों का सुमिश्रण, अर्घ्य बनता है सही ।

सद्भक्त भक्ती करके पाएँ, उर्ध्व स्थित शिव मही ।।

त्रय योग से होके समर्पित, अर्घ्य अर्पित कर रहे ।

जिनदेव गणधर ऋद्धियों की, वन्दना हम कर रहे ।।9।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः चतुःषष्ठिः ऋद्धि सम्पन्न तीर्थंकर गणधराय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा - श्रेष्ठ ऋद्धियाँ पूज्य हैं, गणधर ऋषी महान।

शांतीधारा कर विशद, करते हैं गुणगान ।।

(शान्तये शांतिधारा....)

दोहा - पुष्पांजलि करते विशद, लेकर पावन फूल।

भाते हैं यह भावना, होंय कर्म निर्मूल ।।

(परिपुष्पांजलि क्षिपेत्)

अर्घ्यावली

दोहा - तीर्थंकर चौबीस के, गणधर ऋषी महान ।

पुष्पांजलि कर पूजते, करते हैं गुणगान ।।

(अथ मण्डलस्योपरिपुष्पांजलि क्षिपेत्)

24 तीर्थंकरों के प्रधान गणधर पूजा

स्वयं बुद्ध श्री आदिनाथ जी, धर्म प्रवर्तन किए महान ।
गणधर हुए चौरासी प्रभु के, "वृषभसेन" जी हुए प्रधान ।।
चौबिस तीर्थंकर के गणधर, चौदह सौ बावन अविकार ।
मध्य दीप सम रहे प्रकाशी, दिव्य देशना मंगलकार ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथस्य वृषभसेनादिक चतुरशीति गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / स्वस्तये प्रज्जवलित दीप स्थापनं करोमि ।

श्री "सिंहसेन" अजित जिनवर के, गाये गणधर महिमावान ।
तीन लोक वर्ती जीवों के, उपकारी नब्बे गुणवान ।।
चौबिस तीर्थंकर के गणधर, चौदह सौ बावन अविकार ।
नाश करो सब विघ्न हमारे, अर्चा करते मंगलकार ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथस्य सिंहसेनादिक नवति गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / स्वस्तये प्रज्जवलित दीप स्थापनं करोमि ।

"चारुषेण" सम्भव जिनवर के, कहलाए हैं प्रथम गणेश ।
एक सौ पाँच बताए गणधर, समवशरण में गुरु अवशेष ।।
चौबिस तीर्थंकर के गणधर, चौदह सौ बावन अविकार ।
नाश करो सब विघ्न हमारे, अर्चा करते मंगलकार ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथस्य चारुषेणादिक पंचोत्तरशत गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / स्वस्तये प्रज्जवलित दीप स्थापनं करोमि ।

अभिनन्दन स्वामी के गणधर, "वज्रादिक" गाए गुणवान ।
एक सौ तीन गणी पद वन्दन, करके पूजे महिमावान ।।
चौबिस तीर्थंकर के गणधर, चौदह सौ बावन अविकार ।
नाश करो सब विघ्न हमारे, अर्चा करते मंगलकार ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दन नाथस्य वज्रादिक त्रयाधिकशत गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

"तोतक" गणधर सुमतिनाथ के, प्रथम कहे हैं पूज्य विशेष ।

एक सौ सोलह गणधर पावन, पूज रहे हम जो अवशेष ।।

चौबिस तीर्थंकर के गणधर, चौदह सौ बावन अविकार ।

नाश करो सब विघ्न हमारे, अर्चा करते मंगलकार ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथस्य तोतकादिक षोडषाधिक शत् गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

पद्मप्रभ के परम प्रतापी, "वज्रचमर" जी गणी प्रधान ।

एक सौ दश गणधर का करते, भाव सहित हम भी यशगान ।।

चौबिस तीर्थंकर के गणधर, चौदह सौ बावन अविकार ।

नाश करो सब विघ्न हमारे, अर्चा करते मंगलकार ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मनाथस्य वज्रचामरादिक दशादिक शत गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

गणी मुख्य जिनवर सुपार्श्व के, श्री "बलदत्तादिक् "ऋषिराज ।

पंच नवति पावन गणेश के, पद में अर्घ्य चढ़ाते आज ।।

चौबिस तीर्थंकर के गणधर, चौदह सौ बावन अविकार ।

नाश करो सब विघ्न हमारे, अर्चा करते मंगलकार ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथस्य बलदत्तादि पंचनवति गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

चन्द्रप्रभ के गणी तिरानवे, "दत्तादिक" हैं अतिशयकार ।

जिनके चरण कमल की पूजा, जीवों को करती भव पार ।।

चौबिस तीर्थंकर के गणधर, चौदह सौ बावन अविकार ।

नाश करो सब विघ्न हमारे, अर्चा करते मंगलकार ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभनाथस्य त्रिनवति दत्तादिक गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

"विदर्भादिक" अट्ठयासी गणधर, पुष्पदंत के पूज्य विशेष ।

पुष्पदंत के सेवाकारी, पूज रहे पाने उपदेश ।।

चौबिस तीर्थंकर के गणधर, चौदह सौ बावन अविकार ।

नाश करो सब विघ्न हमारे, अर्चा करते मंगलकार ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंतनाथस्य विदर्भादिक अष्टाशीति गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

शीतलनाथ प्रभू के गणधर, "अनगारादिक" इक्याशी ।

तीन लोक में पूज्य कहाए, जो अतिशय गुण की राशी ।।

चौबिस तीर्थंकर के गणधर, चौदह सौ बावन अविकार ।

नाश करो सब विघ्न हमारे, अर्चा करते मंगलकार ।।10।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथस्य अनगारादिक एकाशीति गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

सप्त अधिक सत्तर गणधर जी, जिन श्रेयांस के रहे महान ।

श्री "कुन्थ्वादि" गणी की पूजा, करते पाने पद निर्वाण ।।

चौबिस तीर्थंकर के गणधर, चौदह सौ बावन अविकार ।

नाश करो सब विघ्न हमारे, अर्चा करते मंगलकार ।।11।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथस्य कुंथुआदि सप्तसप्तति गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

धर्म अग्रणी वासुपूज्य के, गणधर कहे सुधर्मादि त्रिकाल ।

रत्नत्रय के धारी छियासठ, काट रहे भव का जंजाल ।।

चौबिस तीर्थंकर के गणधर, चौदह सौ बावन अविकार ।

नाश करो सब विघ्न हमारे, अर्चा करते मंगलकार ।।12।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनस्य धर्मादिक षट्षष्टि गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

विमलनाथ के पचपन गणधर, प्रथम गणी का मंदर नाम ।

शिवरमणी के ईश चरण में, करते बारम्बार प्रणाम ।।

चौबिस तीर्थंकर के गणधर, चौदह सौ बावन अविकार ।

नाश करो सब विघ्न हमारे, अर्चा करते मंगलकार ।।13।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथस्य जयादि पंचपंचाशत गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यं

निर्वपामीति स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

जिनानन्त के गणधर पावन, श्री जयादि कहलाए पचास ।
मोक्षमार्ग के राही बनकर, करते केवल ज्ञान प्रकाश ।।
चौबिस तीर्थंकर के गणधर, चौदह सौ बावन अविकार ।
नाश करो सब विघ्न हमारे, अर्चा करते मंगलकार ।।14।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनस्य जयादि पंचाशत गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

धर्मनाथ जी धर्म चक्र को, धारण कर पाए शिव वास ।
अरिष्ट सेन आदिक तैंतालिस, गणधर कीन्हे ज्ञान प्रकाश ।।
चौबिस तीर्थंकर के गणधर, चौदह सौ बावन अविकार ।
नाश करो सब विघ्न हमारे, अर्चा करते मंगलकार ।।15।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनस्य अरिष्टसेनादि त्रिचत्त्वारिंशद गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

"चक्रायुध" आदि षट्त्रिंशत, शांतिनाथ के हैं अविकार ।
गणधर के पद पूज रहे हम, पाने को भवदधि से पार ।।
चौबिस तीर्थंकर के गणधर, चौदह सौ बावन अविकार ।
नाश करो सब विघ्न हमारे, अर्चा करते मंगलकार ।।16।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथस्य चक्रायुधादि षट्त्रिंशत गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

कुन्थुनाथ के गणी स्वयंभू, आदिक बतलाए पैंतीस ।
जिनकी अर्चा भक्ति भाव से, करके चरण झुकाते शीश ।।
चौबिस तीर्थंकर के गणधर, चौदह सौ बावन अविकार ।
नाश करो सब विघ्न हमारे, अर्चा करते मंगलकार ।।17।।

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथस्य जिनस्य श्री स्वयंभू आदि पंचत्रिंशत गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

अरहनाथ के प्रथम गणी का "कुम्भादी", बतलाया नाम ।

गणी तीस हैं मंगलकारी, जिनके चरणों विशद प्रणाम ।।
चौबिस तीर्थंकर के गणधर, चौदह सौ बावन अविकार ।
नाश करो सब विघ्न हमारे, अर्चा करते मंगलकार ।।18।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनस्य कुंभादित्रिंशत गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

गणधर मुख्य हैं मल्लिनाथ के, है "विशाख" जिनका शुभनाम ।
अट्ठाईस गणधर की पूजा, करके पाए शिवपुर धाम ।।
चौबिस तीर्थंकर के गणधर, चौदह सौ बावन अविकार ।
नाश करो सब विघ्न हमारे, अर्चा करते मंगलकार ।।19 ।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनस्य विशाखादि अष्टाविंशति गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

मल्लि आदि श्री मुनिसुव्रत के, अष्टादश कहलाए गणेश ।
भव्य जीव उपकारी गुरु के, चरणों वन्दन करें विशेष ।।
चौबिस तीर्थंकर के गणधर, चौदह सौ बावन अविकार ।
नाश करो सब विघ्न हमारे, अर्चा करते मंगलकार ।।20।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत जिनस्य मल्लिआदिअष्टादश गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

श्री नमि जिन की दिव्य देशना, सुप्रभादि झेले शुभकार ।
सत्रह गणधर कहे आपके, पूज रहे हम बारम्बार ।।
चौबिस तीर्थंकर के गणधर, चौदह सौ बावन अविकार ।
नाश करो सब विघ्न हमारे, अर्चा करते मंगलकार ।।21।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनस्य सुप्रभादि सप्तदश गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

नेमिनाथ के गणधर ग्यारह, प्रथम रहे वरदत्त महान ।
नारायण बलभद्र आदि के द्वारा पूज्य हुए गुणवान ।।
चौबिस तीर्थंकर के गणधर, चौदह सौ बावन अविकार ।

नाश करो सब विघ्न हमारे, अर्चा करते मंगलकार ।।22।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनस्य वरदत्तादि एकादश गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

पार्श्वप्रभु के गणी स्वयंभू, आदिक दश थे महिमावान ।

तीन योग से जिनका अर्चन, करके करते हम गुणगान ।।

चौबिस तीर्थंकर के गणधर, चौदह सौ बावन अविकार ।

नाश करो सब विघ्न हमारे, अर्चा करते मंगलकार ।।23।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनस्य स्वयंभू आदि दश गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीपं स्थापनं करोमि ।

प्रथम गणी श्री वीर प्रभु के, इन्द्रभूति गौतम था नाम ।

ग्यारह गणधर की पूजा कर, भव से पाएँ हम विश्राम ।।

चौबिस तीर्थंकर के गणधर, चौदह सौ बावन अविकार ।

नाश करो सब विघ्न हमारे, अर्चा करते मंगलकार ।।24।।

ॐ ह्रीं श्री वीर जिनस्य इन्द्रभूति गौतमआदिक एकादश गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

आदिनाथ से महावीर तक, तीर्थ प्रवर्तक महिमावान ।

समवशरण में गणधर स्वामी, झेले दिव्य ध्वनि महान ।।

चौबिस तीर्थंकर के गणधर, चौदह सौ बावन अविकार ।

नाश करो सब विघ्न हमारे, अर्चा करते मंगलकार ।।25।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति जिनस्य द्विपंचाशदधिक चतुर्दश शत् गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

जयमाला

दोहा – तीर्थंकर चौबीस के, चौबीस गणी प्रधान ।

ऋद्धि मंत्र युत पूजते, हैं जो अतिशय वान ।।

(पद्धड़ि छन्द)

जय ऋषभ जिनेश्वर पूज्य पाद, जय अजित जितंकर दोष राग ।
जय सम्भव सम्भव कृत वियोग, जय अभिनन्दन नंदित पयोज ।।1।।
जय सुमति-सुमति सम्यक् प्रकाश, जय पद्म प्रभ जी पद्म वास ।
जय जय सुपार्श्व जिन पार्श्व रूप, जय चन्द्रप्रभ चन्द्र स्वरूप ।।2।।
जय पुष्पदंत दम अंतरंग, जय शीतल शीतल वचन भंग।
जय श्रेय श्रेय करुणा समूह, जय वासुपूज्य पूज्यानुपूज्य ।।3।।
जय विमल विमल गुण श्रेणि थान, जय जयति अनन्तानन्त ज्ञान ।
जय धर्म धर्म तीर्थेश संत, जय शांति शांति जिनकर्म अंत ।।4।।
जय कुन्थु कुन्थु आदिक अशेष, जय अर मोहारि जय जिनेश ।
जय मल्लि मल्लि आ दाम गंध, जय मुनिसुव्रत सुव्रत निबन्ध ।।5।।
जय नमि नमि चामर निकर स्वामि, जय नेमि धर्मरथ चक्र नेमि ।
जय पार्श्व पार्श्व छेदन कृपाण, जय वर्धमान जय वर्धमान ।।6।।
जय प्रश्न करें आके नरेश, जो भव्य जीव पावें विशेष ।
जय दिव्य देशना दें जिनेश, जिसको झेले उनके गणेश ।।7।।
जय तीर्थंकर चिद्रूप राज, भव सिन्धु मध्य तारण जहाज ।
जय मुक्ति वधू के श्रेष्ठ ताज, हे शिव पथ गामी ! पूज्य पाद ।।8।।

(घत्ता-छन्द)

चौबीस जिनेश्वर, नमित सुरासुर, तीन लोक पति पूज्य वरा ।
जय जय तीर्थंकर, दिव्य दिवाकर, तव पद पूजें सर्व नरा ।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि चतुर्विंशति जिनस्य द्विपंचाशदधिक चतुर्दश शत् गणधरेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - तीन लोक में पूज्य हैं, तीर्थंकर चौबीस ।
जिन पद में वन्दन 'विशद', करते सर्व ऋषीश ।।

(इत्याशीर्वाद :)

ऋद्धि पूजा

(स्थापना)

दोहा- पावन हैं शुभ ऋद्धियाँ, इच्छित फल दातार ।
आह्वानन् करते हृदय, पाने भव दधि पार ॥

ॐ ह्रीं ऋद्धि धारक सर्व ऋषि समूह : अत्र अवतर अवतर संवौषट आह्वानन् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापना । अत्र मम् संन्निहितो भव भव वषट् संन्निधिकरणं ।

(मोतियादाम छन्द)

कलश में भर के लाए नीर, मिटे मम जन्म जरा की पीर ।
ऋद्धियाँ जग में रहीं महान् , पूजते हम पाने शिवधाम ॥1॥

ॐ ह्रीं ऋद्धिधारक सर्व ऋषि समूह जन्म मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा ।

घिसाई हमने पावन गंध, मिटे अब मेरा सारा द्वन्द ।
ऋद्धियाँ जग में रहीं महान् , पूजते हम पाने शिवधाम ॥2॥

ॐ ह्रीं ऋद्धिधारक सर्व ऋषि समूह संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्व. स्वाहा ।

धुलाए अक्षत खुशबूदार, नाश हो जाए भ्रमण संसार ।
ऋद्धियाँ जग में रहीं महान् , पूजते हम पाने शिवधाम ॥3॥

ॐ ह्रीं ऋद्धिधारक सर्व ऋषि समूह अक्षय पद प्राप्ताये अक्षतान् निर्व. स्वाहा ।

चढ़ाते पुष्प यहाँ शुभकार, कामरुज का हो जाए क्षार ।
ऋद्धियाँ जग में रहीं महान् , पूजते हम पाने शिवधाम ॥4॥

ॐ ह्रीं ऋद्धिधारक सर्व ऋषि समूह कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं नर्व. स्वाहा ।

सरस चरु लाए यहाँ महान् , क्षुधा रुज की हो जाए हान ।

ऋद्धियाँ जग में रहीं महान् , पूजते हम पाने शिवधाम ॥5॥

ॐ ह्रीं ऋद्धिधारक सर्व ऋषि समूह क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा ।

दीप यह जला रहे हम आज, मोह तम का हो जाए नाश ।

ऋद्धियाँ जग में रहीं महान् , पूजते हम पाने शिवधाम ॥6॥

ॐ ह्रीं ऋद्धिधारक सर्व ऋषि समूह मोह अधंकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा ।

धूप यहाँ जला रहे मनहार, कर्म हो जाएँ मेरे क्षार ।

ऋद्धियाँ जग में रहीं महान् , पूजते हम पाने शिवधाम ॥7॥

ॐ ह्रीं ऋद्धिधारक सर्व ऋषि समूह अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा ।

चढ़ाते ताजे फल रसदार, मिले अब मोक्ष महल का द्वार ।

ऋद्धियाँ जग में रहीं महान् , पूजते हम पाने शिवधाम ॥8॥

ॐ ह्रीं ऋद्धिधारक सर्व ऋषि समूह मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा ।

चढ़ाते हैं पावन ये अर्घ्यं प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य ।

ऋद्धियाँ जग में रहीं महान् , पूजते हम पाने शिवधाम ॥9॥

ॐ ह्रीं ऋद्धिधारक सर्व ऋषि समूह अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

दोहा : शांति पाने के लिए, देते शांति धार ।
विशद भावना भार है, मिले मोक्ष का द्वार ॥
शान्तये शांतिधार....

दोहा : पुष्पांजलि करते यहाँ, पाने शिव सोपाना ।
भाते हैं यह भावना, मिले शीर्घ निवार्ण ॥
पुष्पांजलि क्षिपेद...

"अड़तालीस ऋद्धियों के अर्घ्य"

दोहा- अड़तालिस हैं श्रेष्ठतम, ऋद्धी मंत्र महान।

पूजें ध्यायें भाव से, पाने शिव सोपान ।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्)

"णमो जिणाणं" श्री जिनवर के, चरणों में शत्-शत् वन्दन ।
केवल ज्ञान ऋद्धि के धारी, बनकर शिवपुर करें गमन ।।
ऋद्धी मंत्र सहित गणधर के, चरणों में करते अर्चन ।
मोक्ष मार्ग के राही बनने, करते बारम्बार नमन ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं जिनेभ्यः नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

ऋद्धी "णमो ओही जिणाणं", योग्य सीमा में हो चिंतन ।
अवधि ज्ञान ऋद्धी धारी ऋषि, के चरणों शत्-शत् वन्दन ।।
ऋद्धी मंत्र सहित गणधर के, चरणों में करते अर्चन ।
मोक्ष मार्ग के राही बनने, करते बारम्बार नमन ।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओही जिणाणं अवधि जिनेभ्यः नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

ऋद्धि "णमो परमोही जिणाणं", धारी करते मोक्ष गमन ।
परमावधि ऋद्धि के धारी, ऋषियों का करते अर्चन ।।
ऋद्धी मंत्र सहित गणधर के, चरणों में करते अर्चन ।
मोक्ष मार्ग के राही बनने, करते बारम्बार नमन ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोही जिणाणं परमावधि जिनेभ्यः नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

ऋद्धि "णमो सव्वोहि जिणाणं", धारी पाएँ लक्ष्य चरम ।
सर्वावधि ऋद्धी धर ज्ञानी, पावें केवल ज्ञान परम।।

ऋद्धी मंत्र सहित गणधर के, चरणों में करते अर्चन ।

मोक्ष मार्ग के राही बनने, करते बारम्बार नमन ।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहि जिणाणं सर्वावधि जिनेभ्यः नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

ॐ णमो "अणंतोहि जिणाणं", करने वाले कर्म शमन ।

अनन्तावधि धारी ऋषिवर के, चरणों कोटि कोटि वन्दन ।।

ऋद्धी मंत्र सहित गणधर के, चरणों में करते अर्चन ।

मोक्ष मार्ग के राही बनने, करते बारम्बार नमन ।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहि जिणाणं अनन्तावधि जिनेभ्यः नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

"णमो कोट्ठ बुद्धीणं" ऋद्धी, कोष्ठ में रक्खे हुए रतन ।

भिन्न-भिन्न जाने युगपत् जो, ऐसा पाएँ ज्ञान सघन ।।

ऋद्धी मंत्र सहित गणधर के, चरणों में करते अर्चन ।

मोक्ष मार्ग के राही बनने, करते बारम्बार नमन ।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्ठ बुद्धीणं बुद्धिऋद्धि सम्पन्नेभ्यः नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

णमो "बीज बुद्धीणं" ऋद्धी, धारी बीज से फल उत्तम ।

पाते हैं अधिकाधिक वैसे, ऋद्धी देती फल अनुपम ।।

ऋद्धी मंत्र सहित गणधर के, चरणों में करते अर्चन ।

मोक्ष मार्ग के राही बनने, करते बारम्बार नमन ।।7 ।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीज बुद्धीणं बीज बुद्धि सम्पन्नेभ्यः नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

णमो "पदानुसारीणं" के, पद से जाने सर्व कथन ।

ऋद्धीधर ऋषियों की अर्चा, से नश जाए जन्म मरण ।।

ऋद्धी मंत्र सहित गणधर के, चरणों में करते अर्चन ।

मोक्ष मार्ग के राही बनने, करते बारम्बार नमन ।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो पादानुसारीणं पादानुसारीणी बुद्धिऋद्धि सम्पन्नेभ्यः नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

णमो "संभिन्न सोदारण" ऋद्धी, धारी जाने सर्व कथन ।

संभिन्न श्रोतृत्व ऋद्धी पाने, करें वन्दना ऋषी चरण ।।

ऋद्धी मंत्र सहित गणधर के, चरणों में करते अर्चन ।

मोक्ष मार्ग के राही बनने, करते बारम्बार नमन ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो संभिन्न सोदारण संभिन्न बुद्धि सम्पन्नेभ्यः नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

णमो "सयं बुद्धीणं" ऋद्धी, से प्रगटाएँ बोधि स्वयं ।

प्रगटाते हैं भव्य जीव जो, पाते अनतिचार संयम ।।

ऋद्धी मंत्र सहित गणधर के, चरणों में करते अर्चन ।

मोक्ष मार्ग के राही बनने, करते बारम्बार नमन ।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयं बुद्धीणं स्वयं बुद्धित ऋद्धि सम्पन्नेभ्यः नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

णमो "पत्तेय बुद्धीणं" ऋद्धी, धारी स्वयं करें चिंतन ।

क्या हित अहित है जीवन में यह, करते हैं जो नित्य मनन ।।

ऋद्धी मंत्र सहित गणधर के, चरणों में करते अर्चन ।

मोक्ष मार्ग के राही बनने, करते बारम्बार नमन ।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेय बुद्धाणं प्रत्येक बुद्धि ऋद्धि सम्पन्नेभ्यः नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

णमो "बोहिय बुद्धाणं" ऋद्धी, धारी पर से बोध परम् ।

पाके संयम धारी होते, पाके मैटें सर्व भरम् ।।

ऋद्धी मंत्र सहित गणधर के, चरणों में करते अर्चन ।

मोक्ष मार्ग के राही बनने, करते बारम्बार नमन ।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहियबुद्धाणं बोधित बुद्धि ऋद्धि सम्पन्नेभ्यः नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

"उजु मदीणं" ऋद्धी धारी, सर्व मनोरथ के ज्ञाता ।

ऋजुमती मनः पर्यय ज्ञानी, ऋषिवर जग जन के त्राता ।।

ऋद्धी मंत्र सहित गणधर के, चरणों में करते अर्चन ।

मोक्ष मार्ग के राही बनने, करते बारम्बार नमन ।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो उजुमदीणं ऋजुमति ऋद्धि सम्पन्नेभ्यः नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

"विउलमदीणं" ऋद्धी पावें, उत्तम संयम के धारी ।

विपुलमति ऋद्धी पाकर भी, रहते हैं जो अविकारी ।।

ऋद्धी मंत्र सहित गणधर के, चरणों में करते अर्चन ।

मोक्ष मार्ग के राही बनने, करते बारम्बार नमन ।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउलमदीणं विपुलमति ऋद्धि सम्पन्नेभ्यः नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

"दश पुव्वीणं" ऋद्धीधारी, दश पूर्वी के हों ज्ञाता ।

विद्यायें सम्मुख ललचाएँ, रखते न उनसे नाता ।।

ऋद्धी मंत्र सहित गणधर के, चरणों में करते अर्चन ।

मोक्ष मार्ग के राही बनने, करते बारम्बार नमन ।।15।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो दश पुव्वीणं चतुर्दशपूर्वित्व ऋद्धि सम्पन्नेभ्यः नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

णमो "चउदश पुव्वीणं" ऋद्धी, अंग पूर्व का जिसमें ज्ञान ।

द्वादशांग के ज्ञाता अनुपम, होते हैं सद्गुण की खान ।।

ऋद्धी मंत्र सहित गणधर के, चरणों में करते अर्चन ।

मोक्ष मार्ग के राही बनने, करते बारम्बार नमन ।।16।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो चउदश पुव्वीणं चतुर्दश पूर्वित्त्व ऋद्धि सम्पन्नेभ्यः नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

णमो "अट्ठांग महानिमित्त कुशलाणं, पावन ऋद्धी के धारी ।

शकुनादी ज्योतिष के द्वारा, दुःखों के हों परिहारी ।।

ऋद्धी मंत्र सहित गणधर के, चरणों में करते अर्चन ।

मोक्ष मार्ग के राही बनने, करते बारम्बार नमन।।17।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठागं महानिमित्त कुशलाणं अष्टांग निमित्त ज्ञातृत्व सम्पन्नेभ्यः नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा/स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

णमो "विउव्वइड्ढी पत्ताणं" दुर्धर तप तपते गुणवान ।

प्रगटाएँ ऋद्धी वे ज्ञानी, करें जगत जन का कल्याण ।।

ऋद्धी मंत्र सहित गणधर के, चरणों में करते अर्चन ।

मोक्ष मार्ग के राही बनने, करते बारम्बार नमन ।।18।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउव्वइड्ढिपत्ताणं विक्रिया ऋद्धि सम्पन्नेभ्यः नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

णमो "विज्जाहराणं" ऋद्धी, से होते ऋषि अंतर्ध्यान ।

भव्य जीव जिनके चरणों मे, भाव सहित करते गुणगान ।।

ऋद्धी मंत्र सहित गणधर के, चरणों में करते अर्चन ।

मोक्ष मार्ग के राही बनने, करते बारम्बार नमन ।।19।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जहराणं विद्याधरत्व ऋद्धि सम्पन्नेभ्यः नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

णमो "चारणाणं" ऋद्धीधर, चारण ऋद्धी धार श्रमण ।

परम पूज्य निर्ग्रन्थ शिरोमणि, करते हम शत् -शत् वन्दन ।।

ऋद्धी मंत्र सहित गणधर के, चरणों में करते अर्चन ।

मोक्ष मार्ग के राही बनने, करते बारम्बार नमन ।।20।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं ऋद्धि सम्पन्नेभ्यः नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

णमो "पण्ण समणाणं ऋद्धी", धारी हों अति प्रज्ञावान ।

जिनकी अर्चा करके हम भी, पाएँ वीतराग विज्ञान ।।

ऋद्धी मंत्र सहित गणधर के, चरणों में करते अर्चन ।

मोक्ष मार्ग के राही बनने, करते बारम्बार नमन ।।21।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्ण समणाणं प्रज्ञा श्रमण सम्पन्नेभ्यः नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा/ स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

णमो "आगास गामीणं" ऋद्धी, धारी करते गगन गमन ।

आश्चर्य होता जिन्हें देखकर, हों ऐसे निर्ग्रन्थ श्रमण ।।

ऋद्धी मंत्र सहित गणधर के, चरणों में करते अर्चन ।

मोक्ष मार्ग के राही बनने, करते बारम्बार नमन ।।22।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगास गामीणं आकाशगामी ऋद्धि सम्पन्नेभ्यः नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

"आसी विसाणं" ऋद्धी धारी, के पद कोटि-कोटि वन्दन ।

वचन सिद्धि करते तप करके, जिनका जीवन होय चमन ।।

ऋद्धी मंत्र सहित गणधर के, चरणों में करते अर्चन ।

मोक्ष मार्ग के राही बनने, करते बारम्बार नमन ।।23।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसी विसाणं आशीर्विषत्व ऋद्धि सम्पन्नेभ्यः नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

"दिट्ठि विसाणं" ऋद्धी अनुपम, ऋद्धीधारी पूज्य श्रमण ।

विष को निर्विष करें ऋद्धि से, जीवन में हो जाय चमन ।।

ऋद्धी मंत्र सहित गणधर के, चरणों में करते अर्चन ।

मोक्ष मार्ग के राही बनने, करते बारम्बार नमन ।।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठि विसाणं दृष्टि विषत्व ऋद्धि सम्पन्नेभ्यः नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

"उग्ग तवाणं" ऋद्धी द्वारा, तप कर करते कर्म विनाश ।

कर्म निर्जरा हेतू करते, संयम पालन व्रत उपवास ।।

गणधर वलय में ऋद्धि मंत्र हैं, करते हम जिनका अर्चन ।

अर्घ्य चढ़ाते दीपार्चन कर, करते भाव सहित वन्दन ।।25।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं उग्रतपः ऋद्धि सम्पन्नेभ्यः नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा/स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

णमो "दित्त तवाणं" ऋद्धी, से तन होवे दीप्तिवंत ।

आत्म विशुद्धी करते हैं जो, रत्नत्रय के धारी संत ।।

गणधर वलय में ऋद्धि मंत्र हैं, करते हम जिनका अर्चन ।

अर्घ्य चढ़ाते दीपार्चन कर, करते भाव सहित वन्दन ।।26।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्ततवाणं दीप्त तपः ऋद्धि सम्पन्नेभ्यः नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा/स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

णमो "तत्त तवाणं" ऋद्धी, धारी तप बल वीर अपार ।

लेते हैं आहार किन्तु वे, करते नहीं हैं कवलाहार ।।

गणधर वलय में ऋद्धि मंत्र हैं, करते हम जिनका अर्चन ।

अर्घ्य चढ़ाते दीपार्चन कर, करते भाव सहित वन्दन ।।27 ।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्त तवाणं तप्ततपः ऋद्धि सम्पन्नेभ्यः नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा/स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

णमो "महातवाणं" धारी, ऋद्धी से तप करें महान ।

कर्म निर्जरा करने हेतू, करते हैं जो अतिशय ध्यान ।।

गणधर वलय में ऋद्धि मंत्र हैं, करते हम जिनका अर्चन ।
अर्घ्य चढ़ाते दीपार्चन कर, करते भाव सहित वन्दन ।।28।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो महातवाणं महातपः ऋद्धि सम्पन्नेभ्यः नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा/स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

णमो "घोर तवाणं" ऋद्धी, धारी तप करते हैं घोर ।
निज आतम को ध्याने वाले, होते मन में भाव विभोर ।।
गणधर वलय में ऋद्धि मंत्र हैं, करते हम जिनका अर्चन ।
अर्घ्य चढ़ाते दीपार्चन कर, करते भाव सहित वन्दन ।।29।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर तवाणं घोरतपः ऋद्धि सम्पन्नेभ्यः नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा/स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

णमो "घोर गुणाणं" ऋद्धी, पाकर गुण प्रगटाएँ अमल ।
घोर गुणों के धारी ऋषि के, पूज रहे हम चरण कमल ।।
गणधर वलय में ऋद्धि मंत्र हैं, करते हम जिनका अर्चन ।
अर्घ्य चढ़ाते दीपार्चन कर, करते भाव सहित वन्दन ।।30।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर गुणाणं घोरगुण ऋद्धि सम्पन्नेभ्यः नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा/स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

"घोर पराक्रम" ऋद्धी मुनिवर, प्रगटाते कर आतम ध्यान ।
होंय पराजित जिनके आगे, उत्तम से उत्तम बलवान ।।
गणधर वलय में ऋद्धि मंत्र हैं, करते हम जिनका अर्चन ।
अर्घ्य चढ़ाते दीपार्चन कर, करते भाव सहित वन्दन ।।31।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुण परक्कमाणं पराक्रम सम्पन्नेभ्यः नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा/स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

णमो "घोर गुण बंभयारीणं", ब्रह्मचर्य धर परम श्रमण ।
ऋद्धि सिद्धि को पाने वाले, निज आतम में करें रमन ।।

गणधर वलय में ऋद्धि मंत्र हैं, करते हम जिनका अर्चन ।

अर्घ्य चढ़ाते दीपार्चन कर, करते भाव सहित वन्दन ।।32।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुण बंभयारीणं घोर गुण ब्रह्मचारित्व ऋद्धि सम्पन्नेभ्यः नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा/स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

"णमो आमोसहि पत्ताणं" यह, ऋद्धी परमौषधि स्वरूप ।

ऋद्धीधर ऋषि के पद वन्दन, पाने वाले अर्हत् रूप ।।

गणधर वलय में ऋद्धि मंत्र हैं, करते हम जिनका अर्चन ।

अर्घ्य चढ़ाते दीपार्चन कर, करते भाव सहित वन्दन ।।33।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमोसहि पत्ताणं आमर्शोषधि ऋद्धि सम्पन्नेभ्यः नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

"खेल्लोसहि पत्ताणं" ऋद्धी, धारी ऋषि गाए अविकार ।

मुनि की लार खखार आदि मल, औषधि बनते मंगलकार ।।

गणधर वलय में ऋद्धि मंत्र हैं, करते हम जिनका अर्चन ।

अर्घ्य चढ़ाते दीपार्चन कर, करते भाव सहित अर्चन ।।34।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो खेल्लोसहिपत्ताणं क्ष्वेलौषधि ऋद्धि सम्पन्नेभ्यः नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

"णमो जल्लोसहि" ऋद्धी का शुभ, लोक में अतिशय रहा प्रभाव ।

तन का स्वेद है रोग निवारी, तारें भव सागर से नाव ।।

गणधर वलय में ऋद्धि मंत्र हैं, करते हम जिनका अर्चन ।

अर्घ्य चढ़ाते दीपार्चन कर, करते भाव सहित अर्चन ।।35।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहि पत्ताणं जल्लौषधि ऋद्धि सम्पन्नेभ्यः नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

णमो "विप्पो सहि पत्ताणं" यह, ऋद्धी है औषधि गुणवान ।

मल मूत्रादि स्पर्शित वायू, से हो जाए रोग निदान ।।

गणधर वलय में ऋद्धि मंत्र हैं, करते हम जिनका अर्चन ।

अर्घ्य चढ़ाते दीपार्चन कर, करते भाव सहित अर्चन ।।36।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विप्पोसहि पत्ताणं विप्रौषधि ऋद्धि सम्पन्नेभ्यः नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

णमो "सव्वोसहि पत्ताणं" है, ऋद्धी अनुपम औषधि वंत ।

तीन लोक में पूज्य मुनीश्वर, इसके धारी होते संत ।।

गणधर वलय में ऋद्धि मंत्र हैं, करते हम जिनका अर्चन ।

अर्घ्य चढ़ाते दीपार्चन कर, करते भाव सहित अर्चन ।।37।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहिपत्ताणं सर्वोषधि ऋद्धि सम्पन्नेभ्यः नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

ॐ णमो "मण बलीणं" ऋद्धी, द्वारा द्वादशांग चिन्तन ।

अन्तर्मुहूर्त में स्थिर होकर, ध्याने वाले रहे श्रमण ।

गणधर वलय में ऋद्धि मंत्र हैं, करते हम जिनका अर्चन ।

अर्घ्य चढ़ाते दीपार्चन कर, करते भाव सहित अर्चन ।।38।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणबलीणं मनोबल ऋद्धि सम्पन्नेभ्यः नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा/स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

"वची बलीणं" ऋद्धीधारी, करें सर्व श्रुत उच्चारण ।

जो मुहूर्त में द्वादशांग को, जानें सब श्रुत का लक्षण ।।

गणधर वलय में ऋद्धि मंत्र हैं, करते हम जिनका अर्चन ।

अर्घ्य चढ़ाते दीपार्चन कर, करते भाव सहित अर्चन ।।39।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचिबलीणं वचो बल ऋद्धि सम्पन्नेभ्यः नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

"काय वलीणं" ऋद्धी धारी, ऋषिवर हों अति शक्तीवान ।

त्रिभुवन कंपित कर सकते पर, करते नहीं हैं उसका मान ।।

गणधर वलय में ऋद्धि मंत्र हैं, करते हम जिनका अर्चन।
अर्घ्य चढ़ाते दीपार्चन कर, करते भाव सहित अर्चन ।।40।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो कायवलीणं कायबल ऋद्धि सम्पन्नेभ्यः नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

णमो "खीर सवीणं" ऋद्धी, धारी ऋषिवर जो अवशेष ।
ऋद्धी बल से दूध स्वाद सम, वचन पौष्टिक पाएँ विशेष ।।
गणधर वलय में ऋद्धि मंत्र हैं, करते हम जिनका अर्चन ।
अर्घ्य चढ़ाते दीपार्चन कर, करते भाव सहित अर्चन ।।41।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीर सवीणं क्षीरस्रावि ऋद्धि सम्पन्नेभ्यः नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

णमो "सप्पि सवीणं" ऋद्धी, से भोजन जो रुक्ष प्रधान ।
रूखा भोजन पाणि पात्र में, हो जाता है सर्पि समान ।।
गणधर वलय में ऋद्धि मंत्र हैं, करते हम जिनका अर्चन ।
अर्घ्य चढ़ाते दीपार्चन कर, करते भाव सहित अर्चन ।। 42।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पि सवीणं सर्पिस्रावि ऋद्धि सम्पन्नेभ्यः नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

ॐ णमो "महु सव्वीण" ऋद्धी, से भोजन जो रुक्ष विशेष ।
मुनि के कर में ऋद्धी द्वारा, मधु सम भोजन हो अवशेष ।।
गणधर वलय में ऋद्धि मंत्र हैं, करते हम जिनका अर्चन ।
अर्घ्य चढ़ाते दीपार्चन कर, करते भाव सहित अर्चन ।।43।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो महु सव्वीणं मधुस्रावि ऋद्धि सम्पन्नेभ्यः नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

ॐ णमो "अमिय सवीणं ऋद्धी", से अमृत की हो बरसात ।
मुनि की अंजुलि में विष मिश्रित, भोजन से विष का हो घात ।।

गणधर वलय में ऋद्धि मंत्र हैं, करते हम जिनका अर्चन ।
अर्घ्य चढ़ाते दीपार्चन कर, करते भाव सहित अर्चन ।।44।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमिय सवीणं अमृतस्रावि ऋद्धि सम्पन्नेभ्यः नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

णमो "अक्खीण महानस ऋद्धी", धारी ऋषि लें जहाँ आहार ।
चक्रवर्ति की सैन्य समाए, उस स्थान में विस्मयकार ।।
गणधर वलय में ऋद्धि मंत्र हैं, करते हम जिनका अर्चन ।
अर्घ्य चढ़ाते दीपार्चन कर, करते भाव सहित अर्चन ।।45।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीण महाणसाणं अक्षीणमहानस ऋद्धि सम्पन्नेभ्यः नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

णमो "वड्ढमाणाणं" ऋद्धी से, होवे ऋद्धी वृद्धीकार ।
केवल ज्ञान प्रकट होने तक, ऋद्धी वर्द्धित हो शुभकार ।।
गणधर वलय में ऋद्धि मंत्र हैं, करते हम जिनका अर्चन ।
अर्घ्य चढ़ाते दीपार्चन कर, करते भाव सहित अर्चन ।।46।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणाणं वर्द्धमानः बुद्धिऋद्धि सम्पन्नेभ्यः नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा/स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

ॐ णमो "सिद्धायदणाणं", ऋद्धी पावें जो ज्ञानी ।
सिद्धायतन जिनगृह के दर्शन, सहज प्राप्त करते प्राणी ।।
गणधर वलय में ऋद्धि मंत्र हैं, करते हम जिनका अर्चन ।
अर्घ्य चढ़ाते दीपार्चन कर, करते भाव सहित अर्चन ।।47।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सिद्धायदणाणं सर्व सिद्धायतन ऋद्धि सम्पन्नेभ्यः नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

नमो ''भयवदोमहदि महावीर, वड्ढमाण'' ऋद्धीधर जान ।
वर्धमान महावीर प्रभू सम, वृद्धीकारी हों गुणवान ।।

गणधर वलय में ऋद्धि मंत्र हैं, करते हम जिनका अर्चन ।
अर्घ्य चढ़ाते दीपार्चन कर, करते भाव सहित अर्चन ।।48।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो भयवदो महदि महावीरवड्ढमाण बुद्धिरिसीणं भगवते महति महावीर वर्द्धमान बुद्धिऋद्धिसम्पन्नेभ्यः नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

"पूर्णार्घ्य"

णमो जिणाणं आदि ऋद्धियाँ, सर्वोत्तम सुखकारी मान ।
अड़तालिस ऋद्धी मंत्रों को, जप के पावें सौख्य महान ।।
सागारी अनगारी जो भी, करें ऋद्धियों का शुभ जाप ।
`विशद` भाव से पूजा करते, उनके कट जाते सब पाप ।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं प्रभृति महदि महावीरवड्ढमाणाणं बुद्धिरिसीणं पर्यंत सर्व ऋद्धि प्राप्त सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

जयमाला

दोहा - चौंसठ ऋद्धी धारते, अर्हत् गणी ऋशीश ।
गणधर वलय विधान कर, झुका रहे हम शीश ।।

।। वीर छन्द ।।

बुद्धि ऋद्धि से जग जीवों में, बुद्धी का हो पूर्ण विकाश ।
फैला मोह तिमिर इस जग में, उसका हो जाता है ह्रास ।।
बल ऋद्धी के द्वारा तन में, बल की वृद्धी होय अपार।
योद्धा कोई भी आ जावे, मुनिवर से न पावे पार ।।1।।
परम विक्रिया ऋद्धी पाकर, धारण करते रूप अपार ।
ऋद्धी धारी मुनि के पद में, वन्दन करते बारम्बार ।।
फूल पात तन्तू जल फल पर, चलते चारण ऋद्धीधार ।

गगन गमन भी करते मुनिवर, तिन पद वन्दन बारम्बार ।।2।।
तपकर तप ऋद्धी प्रगटाते, जिससे तप करते हैं घोर ।
उग्र महातप घोर पराक्रम, तप्त दीप्त तपते अतिघोर ।।
औषधि ऋद्धीधारी मुनि के, तन का मल हो जाय विशेष ।
करने से स्पर्श व्याधियाँ, नशतीं क्षण में शीघ्र अशेष ।।3।।
रस ऋद्धीधारी मुनिवर के, कर में भोजन आते शुद्ध ।
सर्व रसों से पूरित होता, मंगलकारी पूर्ण विशुद्ध ।।
ऋद्धी है अक्षीण महानश, जिससे वस्तू हो न क्षीण ।
अरु अक्षीण महालय ऋद्धी, में आलय होता अक्षीण ।।4।।
आठ ऋद्धियाँ मुख्य कही हैं, उनके भेद हैं अड़तालीस ।
चौंसठ भेद भी उनके गाए, पाते हैं जो जैन ऋशीष ।।
ऋषिवर श्रेष्ठ ऋद्धियाँ पाकर, भी लेते ना उनसे काम ।
निस्पृह वृत्ती धारी साधू, के चरणों में विशद प्रणाम ।।5।।

दोहा- तीर्थंकर गणधर मुनी, ऋद्धीधार ऋशीष ।
`विशद` झुकाते भाव से, जिन चरणों हम शीष ।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं प्रभृति महदि महावीर वड्ढमाणाणं बुद्धिरिसीणं पर्यंत सर्व ऋद्धि प्राप्त सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीपं स्थापनं करोमि ।

दोहा - पूज्य ऋद्धियाँ लोक मे, सुख समृद्धीवान ।
ध्याएँ जो भी भाव से, पावें शिव सोपान ।।

इत्याशीर्वाद

"जाप्य मंत्र"

1. ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् चिक्राय झ्रौं झ्रौं नमः ।

2. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सर्व ऋद्धिवंत गणधर परमेष्ठीभ्यो नमः ।

समुच्चय जयमाला

दोहा – **अर्हत् गणधर ऋद्धियाँ, अतिशय पूज्य त्रिकाल ।**
पृथक-पृथक जिनकी यहाँ, गाते हैं जयमाल ।।

(तारक छन्द)

जय हो जय हो तीन लोक में, शोभित जिन अरहन्तों की ।
जय हो जय हो ऋषभ सेनादि, गणधरादि सब संतों की ।।
णमो जिणाणं आदि ऋद्धियाँ, तीन लोक में मंगलकार ।
निस्पृह वृत्ती धारी साधक, पाते हैं जो अपरम्पार ।।1।।
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, देव श्री अर्हन्त रहे ।
मुनि निर्ग्रन्थ हमारे गुरुवर, शिव पथ गामी संत कहे ।।
तन चेतन का भेद जानकर, सम्यग्दर्शन पाते हैं।
विषय भोग संसार देह तज, जो वैराग्य जगाते हैं ।।2।।
बाह्यरूप निर्ग्रन्थ दिगम्बर, पिच्छि कमण्डल पास रखें ।
ज्ञान ध्यान तप लीन रहें जो, निज आतम जिन रूप लखें ।।
जो प्रमत्त संयम के धारी, अप्रमत्त पद प्रगटाते ।
क्षपक श्रेणि आरोहण करते, अपूर्व करण गुण को पाते ।।3।।
ऋषि अनिवृत्तीकरण ऋषी हो, सूक्ष्म सांपराय को घाते ।
क्षीण मोही होकर के वे ऋषि, विशद ज्ञान को प्रगटाते ।।
समवशरण की रचना करने, को सतेन्द्र तव आते हैं ।
प्रभु की दिव्य देशना पावन, गणधर स्वामी पाते हैं ।।4।।
मति श्रुत अवधि मनःपर्यय ये, चार ज्ञान शुभ पाते हैं ।
णमो जिणाणं आदि ऋद्धियाँ, जिन गणधर प्रगटाते हैं ।।
भव्य जीव के समवशरण में, सब क्लेश नश जाते हैं ।
अतिशय देव ऋद्धियाँ करके, शुभ महिमा दर्शाते हैं ।।5।।
श्री अरिहंत देव गुरु गणधर, ये आदर्श हमारे हैं ।

गणधर वलय ये किए अर्चना, जो भी संयम धारे हैं ।।

संयम पथ के राही साधक, करें अर्चना भाव विभोर ।

विघ्न दूर हो जाएँ सारे, खुशियाँ छाएँ चारों ओर ।।6।।

।। घत्ता छन्द ।।

हे अर्हत् स्वामी !, अन्तर्यामी, गणधरादि ऋषिवर ज्ञानी ।

शुभ ऋद्धि सिद्धियाँ, सब प्रसिद्धियाँ, प्रगटाएँ जो कल्याणी ।।

ॐ ह्रीं अर्हं असि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् चिक्राय झ्रौं झ्रौं नमः चतुषष्टि ऋद्धि सम्पन्न चतुर्विंशति तीर्थंकर 1452 गणधर जिनाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - **विश्व शांति कल्याण की, जागी मन में आस ।**

`विशद` ज्ञान को प्राप्त कर, पाएँ शिवपुर वास ।।

।। इत्याशीर्वाद ।।

गणधर वलय की आरती

गणधर जी अविकार हैं, अतिशय मंगलकार हैं।

चौबिस जिन के गणधर की हम, करते जय-जयकार हैं।। टेक ।।

जिन तीर्थकर केवलज्ञानी, अनन्त चतुष्टय पाते जी-21

स्वर्गलोक के देव सभी मिल, समवशरण बनवाते जी-2।। गणधर ।।1।

दिव्य देशना देकर जिनवर, भव्यों का तम हरते हैं -21

चार ज्ञान के धारी गणधर, वाणी झेला करते हैं-2।।गणधर...।।2।।

नर तिर्यंच अरु देव सभी मिल, समवशरण में आते हैं-21

अपनी-अपनी भाषा में गुरु, अलग-अलग समझाते हैं-2।।गणधर...।।3।।

दीक्षा धारण करते ही मुनि, चार ज्ञान प्रगटाते हैं -21

मति श्रुत अवधि मनःपर्यय शुभ, चार ज्ञान यह पाते हैं-21।। गणधर...।।4।।

`विशद` साधना करने वाले, आतम ज्ञान जगाते हैं -21

बुद्धि विक्रिया चारण आदि, श्रेष्ठ ऋद्धियाँ पाते हैं-2।।गणधर... ।।5।।

श्री गणधर चालीसा

दोहा – **आदिनाथ से वीर एक, तीर्थंकर चौबीस ।**
जिनके चरणों में विशद, झुका रहे हम शीश ।।
दिव्य देशना झेलते, गणधर ऋषी महान् ।
चालीसा गाकर यहाँ, करते हम गुणगान ।।

चौपाई

जय-जय तीर्थंकर शिवकारी, तीन लोक में मंगलकारी ।।1।।
पुण्योदय जिनका शुभ आये, वह तीर्थंकर पदवी पाए ।।2।।
पावन केवल ज्ञान जगावें, समवशरण तव देव रचावें ।।3।।
ॐकारमय जिनकी वाणी, खिरती जग में जन कल्याणी ।।4।।
गणधर होते ऋद्धीधारी, प्रथम कोष्ठ में अतिशयकारी ।।5।।
मुनिगण के स्वामी जो गाए, पावन गणनायक कहलाए।।6।।
लघुनन्दन जिनवर के प्यारे, जिनवाणी के राज दुलारे ।।7।।
सम्यक्दर्शन ज्ञान जगाते, गणधर सम्यक् चारित पाते ।।8।।
पंच महाव्रत समिति के धारी, होते पंचेन्द्रिय जयकारी।।9।।
समवशरण में दीक्षा पावें, पावन चार ज्ञान प्रगटावें ।।10।।
होते हैं जो पंचाचारी, सबको पलवाते अविकारी ।।11।।
शिष्यों के जो गुरू कहाते, सुर-नर-मुनि से पूजे जाते ।।12।।
द्वादश गण के स्वामी गाए, गणाधीश गणपति कहलाए।।13।।
दिव्य देशना झेलें भाई, जो है जन-जन के हितदायी ।।14।।
मंगलमूर्ति अमंगलहारी, नाम अनेक रहे शुभकारी।।15।।
सिद्ध मनोरथ आप कराते, सिद्ध विनायक अतः कहाते ।।16।।
गणपति आप गणेश कहाते, नाम गणाधिप प्राणी गाते ।।17।।
जिस घर में चर्या को जाते, अन्नपूर्ण वे घर हो जाते ।।18।।
चक्री सेना वहाँ पे आए, सारा कटक वहाँ जिम जाए ।।19।।

इस प्रकार ऋद्धी के धारी, गणधर होते अतिशयकारी ||20||
इनके चरणों की रज पाये, रोग-शोक वह पूर्ण नशाये ||21||
इच्छित फल वह प्राणी पाए, अपना जो सौभाग्य जगाए||22||
जल थल नभ पुष्पों पर भाई, फलों पे चलते हैं सुखदायी||23||
मेघ धूप मेघों पे चलते, फिर भी पैर कभी ना जलते ||24||
निष्पृह भू पे चलते जाते, फिर भी जीव कष्ट ना पाते ||25||
गणधर को जो प्राणी ध्याते, कष्ट दूर जिनके हो जाते ||26||
गणाधीश गुरु करुणाकारी, ऋद्धी होती सब दुखहारी||27||
चिन्ता भारी रोग बढ़ाए, चिन्तन से वह ना रह पाए ||28||
गणधर के गुण प्राणी गाए, वह अपना व्यापार बढ़ाए ||29||
कर्जे से प्राणी दब जाए, उससे भी मुक्ती मिल जाए ||30||
निर्धन भारी दौलत पाए, बिगड़े सारे काम बनाए ||31||
यात्रा उसकी हो सुखकारी, दूर होय सारी बीमारी ||32||
आकस्मिक दुर्घटना होवे, जिससे प्राणी जीवन खोवे ||33||
प्राणी यदि घायल हो जाए, भक्ती से बहु शांती पाए ||34||
अज्ञानी सज्ञान जगाए, शिवपुर का राही बन जाए ||35||
बुद्धी बल हर प्राणी पाए, ऋद्धि सिद्धि सौभाग्य जगाए ||36||
आधि-व्याधि के होते नाशी, गणधर होते ज्ञान प्रकाशी ||37||
गणधर को जो पूजे ध्याए, गणधर वलय विधान रचाए ||38||
पावन मुनि की दीक्षा पाए, वह प्राणी गणधर बन जाए ||39||
'विशद' यहाँ चालीसा गाए, गणधर बन शिवपदवी पाए||40||

दोहा – चालीसा चालीस दिन, पढ़ते हैं जो जीव।
सुख शांती सौभाग्य पद, पाते पुण्य अतीव ||
रोग-शोक दुख दूर हो, नश जाएँ सब पाप ।
बढ़े भाग्य सुख सम्पदा, किए भाव से जाप ||

जाप्य – ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा झ्रौं झ्रौं नमः।

श्री चतुर्विंशति स्तोत्र (जिन गणधर)

(श्री छन्द)

(आ. श्री विशद सागर जी मुनिराज)

यस्य महर्षे वृषभ सेनेशं, गणी प्रथम श्री आदि जिनेशं ।
सिंहसेन गणराज महन्तं, अजितेश्वर द्वितीय अर्हन्तं ।।
चारुषेण गणराज ऋषीशं, संभवनाथ जिनेश महीशं ।
वज्रनाभि गणराज प्रधानं, अभिनंदन जिन महिमा मानं ।।1।।
अमर गणी सद्ज्ञान प्रकाशं, सुमति जिनेशं पद अभिलाषं ।
वज्र चामरादिक गणधीशं, पद्मप्रभ पद विनत ऋषीशं ।।
गणनायक बल आदिक सारं, दिव्य देशना विशद प्रसारं ।
गणधर श्री दत्तादि मुनीशं, चन्द्रप्रभ जिन पद वागीशं ।।2।।
श्री विदर्भ आदिक योगीशं, पुष्पदंत पद नमित ऋषीशं ।
गणनायक अनगाराधीशं, शीतलेश जिन आराधीशं ।।
कुन्थु आदि श्रेयांस जिनेशं, पूजित पद सुरपति परमेशं ।
धर्मादिक अतिशय गणनाथं, वासुपूज्य पूजित पद माथं ।।3।।
विमलनाथ जिन चरण नतायं, मंदरादि गणनायक ध्यायं ।
जिनानंत भव ताप विनाशं, जया आदि गणि ज्ञान प्रकाशं ।।
कल्पतरु जिन धर्म सुनाथं, पूज्य अरिष्टादिक ऋषि साथं ।
मदन चक्रधारी तीर्थेशं, शांतिशां चक्राधि गणेशं ।।4।।
कुन्थुनाथ त्रय पद धारीशं, स्वयंभ्वादि गणधर योगीशं ।
कुम्भादिक अरनाथ गणेशं, वीतराग अविकारी भेषं ।।
विशाखादि अठ बीस गणेन्द्रं, मल्लिनाथ पद नमित शतेन्द्रं ।
मल्लि आदि मुनिसुव्रत देवं, अष्टादश गणि पूजित एवं ।।5।।
सुप्रभादि नमिनाथ जिनेशं, गणधर जगत पूज्य अवशेषं ।
गणधर वरदत्तादिक सारं, नेमिनाथ परिपूजित पारं ।।
स्वयंभ्वादिक दश गणराजं, पार्श्वनाथ जिन सेवित ताजं ।
गणधर गौतमादि विख्यातं, विशद वीर पद नावित माथं ।।6।।

(शार्दूल विक्रीडित छंद)

अष्टा विंशति मूल वृत्त सहिताः, उत्तर गुणै मण्डिताः ।
ये ते विघ्न विनाशका गणधरास्-, तेषां समस्त ऋद्धया ।।
आचार्यादि मुनीश्वरा बहु विधा, धर्म ध्वजा धारकाः ।
ते सर्वेपि दिगम्बराः सुविशदं, कुर्यात् सदा मंगलं ।।7।।

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज - माई री माई मुंडेर पे तेरे बोल रहा कागा...)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारें, आरति मंगल गावें ।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे ॥
गुरुवर के चरणों में नमन...4 मुनिवर के...

ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता ।
नथूराम जी पिता आपके, छोडा जग से नाता ॥
सत्य अहिंसा महाव्रती की...2, महिमा कही न जाये ।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे ॥
गुरुवर के चरणों में नमन...4 मुनिवर के...

सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया ।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया ॥
जग री माया को लेकर...2, मन वैराग्य समावे ।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे ॥
गुरुवर के चरणों में नमन...4 मुनिवर के...

जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा ।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा ॥
गुरु की भक्ति करने वाला...2, उभय लोक सुख पावे ।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे ॥
गुरुवर के चरणों में नमन...4 मुनिवर के...

धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे ।
सगे स्वजन सब छोड दिये हैं, आतम रहे निहारे ॥
आशीर्वाद हमें दो स्वामी...2, अनुगामी बन जायें ।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे ॥
गुरुवर के चरणों में नमन...4 मुनिवर के...

रचयिता : श्रीमती इन्दुमती गुप्ता, श्योपुर